



चेतना

अंक 32वाँ सितंबर 2021



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

चेतना परिवार



बैठे हैं (बायें से दायें) श्री मुकेश कुमार लाल, वरीय उप महालेखाकार (प्रशासन, जी० ई० एवं पेंशन)
श्री प्रवीण कुमार सिंह, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
श्री मनमीत कुमार, उप महालेखाकार (लेखा एवं भी. एल. सी. एवं कार्य)

खड़े हैं (बायें से दायें) सुश्री रूपा कुमारी, क० हि० अ० - सह-सहायक संपादक
श्री चंदन कुमार, लेखाकार - सह-सहायक संपादक
श्री जितेन्द्र मल्होत्रा, स० ले० अ० (तदर्थ) - सह-सहायक संपादक
श्री श्रीराम पाण्डेय, स० ले० अ० -सह-संपादक
श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह, व० ले० अ०-सह-प्रधान संपादक
श्री अभिजित कुमार सिन्हा, स० ले० अ०-सह-सहायक संपादक



चेतना

अक्टूबर, 2020 से सितम्बर, 2021

वार्षिक हिंदी पत्रिका 32वाँ अंक

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
का कार्यालय, महालेखाकार भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना - 800001

चेतना के इस 32वें अंक में प्रकाशित सभी रचनायें लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिए गये विचार/मंतव्य उनके अपने हैं। इससे किसी प्रकार की सहमति/असहमति सम्पादक मण्डल की नहीं है।

स्वत्वाधिकार	:	प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
प्रकाशन	:	‘चेतना’
प्रकाशक	:	प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का कार्यालय, महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना - 800001
अंक-32वाँ	:	(अक्टूबर, 2020 से सितम्बर, 2021)
मुख्य पृष्ठ	:	सभ्यता द्वार, पटना, बिहार
मूल्य	:	राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा
मुद्रक	:	जी० बी० प्रिन्टर्स, पटना

चेतना परिवार

संरक्षक

श्री प्रवीण कुमार सिंह

प्रधान महालेखाकार

(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति,

श्री मुकेश कुमार लाल,

वरीय उप महालेखाकार

(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

श्री मनमीत कुमार,

उप महालेखाकार

(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रधान सम्पादक

श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सम्पादक

श्री श्रीराम पाण्डेय

सहायक लेखा अधिकारी

सहायक सम्पादक

श्री अभिजीत कुमार सिन्हा

सहायक लेखा अधिकारी

सहायक संपादक

श्री जितेन्द्र मल्होत्रा

सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

सहायक संपादक

सुश्री रुपा कुमारी

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

सहायक संपादक

श्री चंदन कुमार

लेखाकार

अनुक्रमणिका

क्र०स०

1	चेतना परिवार	ii
2	अनुक्रमणिका	iii
3	प्रधान महालेखाकार का संदेश	v
4	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश	vi
5	उप महालेखाकार (भी० एल० सी० एव कार्य) का संदेश	vii
6	संपादकीय	viii
7	पुरस्कार वितरण (वर्ष 2020-21)	ix
8	प्रधान महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी कक्षा की गतिविधियाँ वर्ष 2020-21	x
9	संवेदना संदेश	xii

क्रम सं०	रचना	रचनाकार का नाम	पदनाम	रचना के प्रकार	पृष्ठ सं०
✓ 1.	कोलकाता ऑफिस की यादें...	रूपा कुमारी	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	कविता	1
✓ 2.	गाँव-तब और आज	उमेश चौधरी	वरीय लेखा अधिकारी	लेख	3
✓ 3.	संकीर्ण डगर	बंशीधर मिश्रा	वरीय लेखा अधिकारी	कविता	5
✓ 4.	तन्हा सफर	प्रतिमा कुमारी	सहायक पर्यवेक्षक	कविता	6
/ 5.	मुम्बई- एक मायानगरी	स्वाति सौरभ	सुपुत्री- श्री उमेश चौधरी, वरीय लेखा अधिकारी	लेख	7
/ 6.	बाधाओं से संघर्ष के पश्चात सफलता	धीरज कुमार	वरीय लेखाकार	कहानी	9
/ 7.	लड़की होना वरदान या अभिशप	प्रीति कुमारी	डी० ई० ओ०	लेख	10
/ 8.	ऊँ	उत्तम कुमार	वरीय लेखाकार	लेख	12
/ 9.	ज्ञान का उपयोग	धीरज कुमार	वरीय लेखाकार	कहानी	13
/ 10.	बेड़ियां	प्रीति कुमारी	डी० ई० ओ०	कविता	14
/ 11.	तेरे चरणों की सेवा	रवि कुमार	एम. टी. एस.	कविता	15
12.	नारी शक्ति-परिचय	अर्चना	सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)	कविता	16

क्रम सं०	रचना	रचनाकार का नाम	पदनाम	रचना के प्रकार	पृष्ठ सं०
✓ 13.	तीन पहर	आफताब अंसारी	सहायक पर्यवेक्षक	कविता	18
✓ 14.	बकाया	अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय	वरीय लेखा अधिकारी	कहानी	19
✓ 15.	सावन पर कजरी	बनवारी सिंह	केयर टेकर	लोकगीत	25
✓ 16.	मैं कौन हूँ?	आनंद प्रकाश	वरीय लेखाकार	कविता	26
✓ 17.	ज़रा मुस्कुराइए	राम सिंगार चौहान	सहायक लेखा अधिकारी	गजल	27
✓ 18.	कोरोना काल	बनवारी सिंह	केयर टेकर	लोकगीत	28
✓ 19.	तीन तेरह होना	राज कुमार	सं०ले०अ०/तदर्थ	हास्य-कथा	29
✓ 20.	दोस्ती	चंदन कुमार	लेखाकार	कविता	30
✓ 21.	सड़क सुरक्षा	पूर्णन्दु कुमार झा	द्वारा-अविनाश कु० ठाकुर सं०ले०अ०	गीत	31
✓ 22.	कि नज़रों में जब से वो आने लगे हैं	राम सिंगार चौहान	सहायक लेखा अधिकारी	गजल	33
✓ 23.	कोरोना को हराना है	पल्लवी राज	पुत्री-सत्येन्द्र माँझी, लेखाकार	कविता	34
✓ 24.	साथी हाथ बढ़ाना	लक्की कुमार माँझी	पुत्र-सत्येन्द्र माँझी, लेखाकार	कविता	35
✓ 25.	ये गरीब बच्चे	रुद्र प्रताप सिंह	पुत्र-श्री शंकर लाल सिंह, सं०ले०अ०तदर्थ	कविता	36
✓ 26.	प्रकृति का उपहार	रुद्र प्रताप सिंह	पुत्र-श्री शंकर लाल सिंह, सं०ले०अ०तदर्थ	कविता	37
✓ 27.	पवित्र प्रेम	कुमारी संगीता सिन्हा	सहायक पर्यवेक्षक	कहानी	38
✓ 28.	साथी	कुमारी संगीता सिन्हा	सहायक पर्यवेक्षक	कहानी	41
✓ 29.	हमारा कर्तव्य	उत्तम कुमार	वरीय लेखाकार	लेख	45
✓ 30.	पुस्तक	आनंद कुमार श्रीवास्तव	डी.ई.ओ.	कविता	46
✓ 31.	ऊँचे-ऊँचे मड़वा	रवि कुमार	एम. टी. एस.	भक्ति गीत	47
✓ 32.	गूँजती यादें तेरी	आभा झा	द्वारा-अविनाश कु० ठाकुर (सं०ले०अ०)	कविता	48
✓ 33.	वो पल	शिवानी चंद्रा	कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	कविता	49
✓ 34.	अधूरेपन का एहसास	प्रियंका कुमारी	पत्नी श्री चंदन कुमार लेखाकार	कविता	50



संदेश

हिन्दी हमारी मातृभाषा, राज्यभाषा, और राजभाषा है। इसके पीछे युग और इतिहास ही नहीं, भारतीय जनता की विराट शक्ति भी है। भारत सरकार की यह सुविचारित नीति है कि संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी तथा राज्यों के सरकारी कामकाज के लिए अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि हो। वास्तव में इनका विकास और समृद्धि एक दूसरे पर निर्भर है। राजभाषा विभाग हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में उसकी प्रयोग-वृद्धि के क्षेत्र में कार्यरत है। अतः हमारा भी परम कर्तव्य है कि इस पुनीत कार्य में पूर्ण सहयोग करें। इन्हीं उद्देश्यों से अनुप्रेरित होकर हमारे कार्यालय से हिन्दी पत्रिका "चेतना" का प्रकाशन होता रहा है।

मुझे यह कहते हुए बेहद खुशी हो रही है कि पत्रिका का 32वाँ अंक हमारे सहृदय एवं सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है जिसे पढ़कर वे सृजनात्मक मेधा का भरपूर आनन्द लेंगे। साथ ही मैं उन समस्त रचनाकारों एवं पत्रिका के सम्पादक तथा परामर्शदातृ समिति के सदस्यों को भी साधुवाद देता हूँ जिन्होंने अपने अथक प्रयास से पत्रिका को रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक बनाया है।

अन्त में मेरी यही मंगलकामना है कि इस कार्यालय में हिन्दी की यह सृजन-चेतना सतत अपनी रश्मि बिखेरती रहे।

शुभकामनाओं सहित।

प्रवीण कुमार सिंह

प्रवीण कुमार सिंह
प्रधान महालेखाकार



संदेश

हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का 32वाँ अंक इस कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं संपादक मंडल के सहयोग से आपके समक्ष प्रस्तुत है। राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए हम सब का दायित्व है कि सरकारी काम-काज में हिन्दी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा अपरिहार्य परिस्थितियों में ही अंग्रेजी का प्रयोग करें।

हिन्दी भाव-सम्प्रेषण की सरल भाषा है। फलस्वरूप इसके माध्यम से पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने की कोशिश की गई है, जो कारगर साबित होता दिख रहा है। भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा केन्द्रीय कार्यालयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों/उपक्रमों में राजभाषा हिन्दी में कार्य करने की प्रतिबद्धता पर बल दिया गया है, जिसका सुखद परिणाम पूरे देश में परिलक्षित है।

कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मैं अपनी तरफ से शुभकामनायें व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने हिन्दी में कार्य कर शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त किया एवं कार्यालय का सम्मान बढ़ाया है।

धन्यवाद।

जय हिन्द! जय हिन्दी!

मुकेश कुमार लाल
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)



संदेश

हिन्दी हमारे देश की सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है। चौदह सितंबर सन् उन्नीस सौ उनचास को भारत के राजभाषा के रूप में इसको मान्यता मिली। तभी से चौदह सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। यद्यपि इसका विकास एवं प्रचार-प्रसार उत्तरोत्तर हो रहा है, परंतु इसका प्रवाह बहुत ही संतोषजनक नहीं है। इसके लिये हमसब को मिलकर प्रयास करना चाहिये। हमें कोशिश करनी चाहिये कि हमारे कार्यालय में भी जहाँ तक संभव हो सके, काम-काज हिन्दी में ही किये जायें।

हमारे कार्यालय की पत्रिका 'चेतना' भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही है। इस पत्रिका का उद्देश्य है कि हमारे कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति अभिरुचि एवं रचनात्मकता बनी रहे। 'चेतना' में अपनी रचना देने के लिये सभी रचनाकारों को धन्यवाद देता हूँ। साथ ही इसके साजो-सज्जा, कलेवर एवं संपादन के लिये संपादक मंडल को भी साधुवाद।

जय हिन्दी। जय भारत

मनमीत सिंह,
उप महालेखाकार
(लेखा, भी0एल0सी0एवं कार्य)



हिन्दी दिवस पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 32वें अंक को हिन्दी प्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रसार के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है। शासकीय कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति अभिरुचि सहित जागरूकता लाने एवं इसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की जाती रही है। पत्रिका के प्रचार एवं विकास के लिए सतत प्रयत्न हो रहा है। तीव्र गति से हो रहे तकनीकी विकास के कारण प्रतिदिन नये शब्दों का प्रयोग हो रहा है। अतः विश्व की अन्य भाषाओं के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना आवश्यक है, ताकि अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हिन्दी भी शान से अपनी गरिमा एवं गौरव का स्थान पा सके।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी की प्रगति सराहनीय रही है, परन्तु लक्ष्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से पूर्णतः संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता। अतः हिन्दी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए प्रतिदिन हिन्दी बोलने, पढ़ने और लिखने की आदत निःसंकोच रूप से डालनी पड़ेगी।

आज 'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर यह संकल्प लेना होगा कि सभी शासकीय कार्य राजभाषा हिन्दी में ही की जायेगी। साथ ही हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु मार्ग में आनेवाली समस्त कठिनाईयों को दूर की जायेगी।

इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से नम्र निवेदन है कि वे अपनी रचनायें, लेख, संस्मरण, निबन्ध एवं कविता इत्यादि प्रत्येक माह नियमित रूप से हिन्दी कक्ष को देते रहेंगे, ताकि पत्रिका अपने त्रैमासिक लक्ष्य को प्राप्त कर सके और पाठकगण इससे लाभान्वित हो सकें।

आदरणीय पाठकों से भी सादर अनुरोध है कि पत्रिका के संबंध में अपने विचार एवं सुझाव बेहिचक सूचित करेंगे। इसके अतिरिक्त इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी एवं रोचक बनाने में अपनी रचना से इसे सुशोभित करने की कृपा करेंगे।

अंत में अपने हिन्दी-प्रेमी विद्वान, संरक्षक माननीय प्रधान महालेखाकार श्री प्रवीण कुमार सिंह तथा परामर्शदातृ समिति, सम्पादक-मण्डल के सदस्यों एवं समस्त रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके अपार स्नेह एवं सहयोग से यह पत्रिका प्रकाशित हो पा रही है। पत्रिका में सुन्दर चित्रांकन एवं सफल मुद्रण के लिए सामान्य अनुभाग की भूमिका भी अत्यंत सराहनीय रही है। उन्हें 'चेतना परिवार' की ओर से कोटि-कोटि धन्यवाद! पत्रिका में त्रुटि नहीं हो, इसका पूरा प्रयास किया गया है तथापि यदि उसमें त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए क्षमा याचना है। इसके लिए विज्ञ पाठकगण मार्ग दर्शन कराने का अनुरोध करेंगे। अपनी ओर से सभी पाठकों और रचनाकारों को पुनः बधाई देता हूँ।

जय हिन्द, जय हिन्दी ।

श्रीराम पाण्डेय
(संपादक)

पुरस्कार वितरण (वर्ष-2020)

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अति उत्साह से भाग लिया गया, जिसमें सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :-

क्र. सं.	कार्यक्रम	श्रेणी	प्रतिभागियों के नाम श्री/श्रीमती/सुश्री
1	निबंध प्रतियोगिता	प्रथम	सन्नी सिन्हा (स०ले०प०अ०, तदर्थ) ले०प०कार्यालय
		द्वितीय	रंजीत कुमार (स०ले०अ०, तदर्थ) ले०/ह०कार्यालय
		तृतीय	अविनाश कु० ठाकुर (स०ले०अ०) ले०/ह०कार्यालय
2	प्रारूप लेखन एवं संक्षेपण	प्रथम	स्व० अंजनी कुमार (स०ले०अ०) ले०/ह०कार्यालय
		द्वितीय	अविनाश कु० ठाकुर (स०ले०अ०) ले०/ह०कार्यालय
		तृतीय	रंजीत कुमार (स०ले०अ०, तदर्थ) ले०/ह०कार्यालय
3	कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता	प्रथम	रंजीत कुमार (डी०ई०ओ०) ले०/ह०कार्यालय
		द्वितीय	रंजय कु० शर्मा (लिपिक) ले०प०कार्यालय
		तृतीय	शंकर लाल सिंह (व०लेखाकार) (ले० व ह० का०)
4	स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता	प्रथम	अर्चना, (स०ले०अ०, तदर्थ) ले०/ह०कार्यालय
		द्वितीय	राम सिंगार चौहान (स०ले०अ०) ले०/ह०कार्यालय
		तृतीय	भुवन भास्कर, (व०ले०प०अ०) लेखापरीक्षा का०
5	राजभाषा प्रतियोगिता	प्रथम	अविनाश कु० ठाकुर (स०ले०अ०) ले०/ह०कार्यालय
		द्वितीय	संयुक्त रूप से स्व० अंजनी कुमार (स०ले०अ०) ले०/ह०कार्यालय
		तृतीय	सन्नी सिन्हा (स०ले०प०अ०, तदर्थ) ले०प०कार्यालय
			रंजीत कुमार, स०ले०अ०, तदर्थ (ले० ह० कार्यालय)

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है, उसका विवरण निम्नांकित है:-

1. राजभाषा अधिनियम 3(3) का अनुपालन:

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत वर्ष 2020-21 में कुल 2155 दस्तावेज जारी किए गए, जिनमें से लगभग सभी हिन्दी/द्विभाषी में जारी किए गए। अंग्रेजी में जारी किए गए दस्तावेजों की संख्या 01 रही।

2 हिन्दी पत्राचार :

वर्ष 2020-21 के दौरान इस कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 90627 थी, जिनमें से 44897 के उत्तर हिन्दी में दिए गए। शेष पत्रों के उत्तर दिए जाने अपेक्षित नहीं थे। कार्यालय द्वारा हिन्दी में भेजे गये पत्रों की प्रतिशतता 100 प्रतिशत रही।

3 राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

वर्ष 2020-21 में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 4 बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं, जिनमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के कार्यान्वयन पर विचार-विमर्श किया गया। अधिकांश निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति की गई।

4 हिन्दी कार्यशाला:

वर्ष 2020-21 के दौरान इस कार्यालय में 4 हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई गईं, जिनमें कार्यालय के 45 अधिकारियों/ कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

5 हिन्दी पुरस्कार योजना:

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निदेशानुसार वर्ष 2020-21 के दौरान मूल हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों/ कर्मचारियों को हिन्दी दिवस के अवसर पर नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

6 हिन्दी-पखवाड़ा समारोह का आयोजन:

वर्ष 2020 में 14 सितम्बर, 2020 से 29 सितम्बर 2020 तक हिन्दी पखवाड़ा समारोह का वृहत् आयोजन किया गया। पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा निबंध-प्रतियोगिता, प्रारूप-लेखन एवं संक्षेपण प्रतियोगिता, हिन्दी-अनुवाद प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गयीं। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य पर पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

7 हिन्दी शिक्षण योजना:

इस कार्यालय में अधिकारियों/ कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है। यहाँ 100 अधिकारी एवं 527 कर्मचारी हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। यहाँ सभी हिन्दी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं। यहाँ 12 टंकक तथा 71 डाटा एंट्री ऑपरेटर हैं, जिनमें 00 टंकक तथा 71 डाटा एंट्री ऑपरेटर प्रशिक्षण के लिए शेष हैं।

8 हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन:

इस कार्यालय में लगभग शत प्रतिशत हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है। वर्ष 2020-21 के दौरान इस कार्यालय में कुल 50265 टिप्पणियाँ लिखी गईं, जिनमें 49797 टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखी गईं।

इस प्रकार इस कार्यालय द्वारा कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिकतर लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया है, जिसकी समीक्षा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में की जाती रही है।



सवेदना सदेश

हमारे कार्यालय के चार साथी जो पिछले वर्ष तक हमारे साथ थे, उनका असामयिक निधन हो गया है एवं हमसे बिछड़ कर दूर चले गये हैं। अत्यंत दुःख के साथ हम उनके नाम नीचे दे रहे हैं।

- | | |
|---|---------------------------|
| 1. श्रीमती सुनैना कुमारी, एम0टी0एस0 | मृत्यु की तिथि-07.10.2020 |
| 2. श्री जगदीश प्रसाद, लिपिक(कैंटिन) | मृत्यु की तिथि-30.03.2021 |
| 3. श्री अंजनी कुमार, सहायक लेखा अधिकारी | मृत्यु की तिथि-22.04.2021 |
| 4. श्री राम ईश्वर चौबे, एम0टी0एस0 | मृत्यु की तिथि-03.05.2021 |

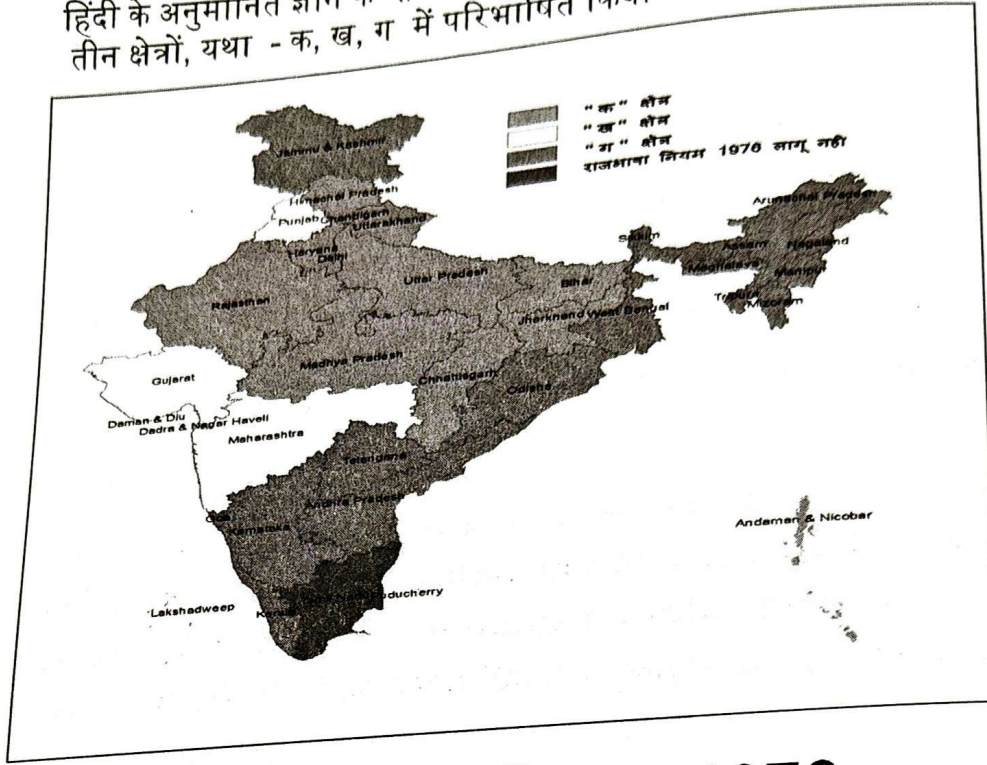
महालेखाकार परिवार उनकी सेवा एवं योगदान के लिये सदैव ऋणी रहेगा एवं इस दुःख की घड़ी में उनके शोक-संतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है। साथ ही उन शोकाकुल परिवारों के प्रति अपने कर्तव्य एवं दायित्व को निभाने के लिये तत्पर महालेखाकार परिवार हमेशा उनके साथ है। वे महान आत्माएँ आज जहाँ भी हों, उन्हें ईश्वरीय शान्ति मिलती रहे।

शोकातुर महालेखाकार परिवार



राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा - क, ख, ग में परिभाषित किया गया है



राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा - क, ख, ग में परिभाषित किया गया है।

भाषा क्षेत्र	राज्य/संघ राज्य
'क'	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य हैं
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य
'ग'	उपरोक्त निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य



रूपा कुमारी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कोलकाता ऑफिस की यादें...

कोलकाता ऑफिस की यादें...

कुछ खट्टी लेकिन मिठास बेहिसाब
पहली नौकरी की खुशी, कुछ नया करने की चाह
मन की बेचैनी एवं उत्सुकता जब बिल्कुल नई हो राहें
सहकर्मियों का साथ और वरिष्ठ अधिकारियों का स्नेह
काफी है न? किसी कार्यालय की यादों को जिंदा रखने के लिए।

कोलकाता ऑफिस की यादें...

कुछ खट्टी लेकिन मिठास बेहिसाब
भुलाई नहीं जा सकती यादें अपने टेबल और कंप्यूटर की
जो पल-पल साथ देता था मेरा, एक सच्चे साथी के जैसा
भुलूं कैसे जीवन के उस नए अध्याय को
जिसने जीवन को एक नया मोड़ एक नई पहचान दी।

कोलकाता ऑफिस की यादें...

कुछ खट्टी लेकिन मिठास बेहिसाब
ऑफिस की इमारत, समय से पहुँचने के लिए सीढ़ियों की भाग-दौड़
फाईलों से बातें और सबसे आगे निकलने की होड़
गलतियों से हर रोज कुछ सीखना व सीखते रहना
याद आता है अनुभव व सफलता की ओर स्वतः बढ़ना।

कोलकाता ऑफिस की यादें...

कुछ खट्टी लेकिन मिठास बेहिसाब
सहकर्मियों व अनुभवीजनों से पहचान का प्रतिदिन बढ़ता दायरा
खुद में विश्वास जगाता कि हाँ! मेरी साख कमजोर नहीं
कि मेरा अस्तित्व कायम है इस नए कार्यालयीन जगत में
अलग सा महसूस होता है इस सुखद अनुभव में।

कोलकाता ऑफिस की यादें...
कुछ खट्टी लेकिन मिठास बेहिसाब
अब अक्सर सोचती हूँ
गर थोड़ा संघर्ष न होता जीवन में, न होता सामना मतलबपरस्त लोगों से
क्या कभी मैं समझ पाती जीवन की असल मिठास ?
क्या मैं कर पाती अंतर अच्छे-बुरे में ?

कोलकाता ऑफिस की यादें...
कुछ खट्टी लेकिन मिठास बेहिसाब
कितना प्रेम व सम्मान था सबके मन में जान पाई उस दिन
जब अकस्मात् आया मुख्यालय से स्थानान्तरण आदेश
वरिष्ठ अधिकारियों की फटकार व शाबाशी में हमेशा निहित होती है हमारी
भलाई
कोलकाता ऑफिस इसलिए और भी बहुत याद आता है।

कोलकाता ऑफिस की यादें...
कुछ खट्टी लेकिन मिठास बेहिसाब।





उमेश चौधरी
वरीय लेखा अधिकारी

एक समय वह भी था जब हम गाँव में रहते थे। लोगों से एक आत्मिक रिश्ता होता था। गाँव के सभी लोग एक रिश्ते में बँधे होते थे। कोई दादा, कोई चाचा, कोई भैया तो कोई भतीजा लगता था। गाँव की महिलाएं भौजी, काकी, चाची, दीदी आदि संबंधों से पुकारी जाती थी। गाँव में डिग्रीधारी डॉक्टर नहीं बल्कि झोला छाप डॉक्टर हुआ करते थे जो गाँव में घुम-घुमकर लोगों का इलाज करते थे। गाँव में स्वास्थ्य सेवा नाम की कोई चीज नहीं थी। लोग घरेलू उपचार से भी ठीक हो जाया करते थे। इसी तरह शिक्षा की कोई उचित व्यवस्था नहीं थी। कई-कई गाँव पर एक सरकारी स्कूल हुआ करता था। बच्चे पैदल उस स्कूल में पढ़ने जाया करते थे। स्कूल में बच्चों के बैठने के लिए न तो बेंच हुआ करता था और न ही डेस्क। वे अपने-अपने घरों से बोरा चटाई आदि लेकर स्कूल जाते थे। लेकिन शिक्षकों में त्याग तथा कर्तव्य की भावना रहती थी। सही मायने में गुरु-शिष्य का संबंध उस समय देखने को मिलता था। शिष्य भी गुरु के प्रति आदर का भाव रखते थे। उस समय निजी विद्यालय नहीं हुआ करता था। गाँव में आय का कोई साधन नहीं था। लोग कृषि पर आश्रित थे और अपनी जरूरत की पूर्ति हेतु कृषि उत्पादन से ही काम चलाते थे। गाँव में पीने के पानी का साधन कुँआ हुआ करता था। कहीं कहीं चापाकल भी दिखाई पड़ जाता था। लेकिन पानी का मुख्य स्रोत कुँआ ही था। गाँवों में आवागमन का साधन बैलगाड़ी तथा साईकिल था। कृषि या सामूहिक कार्यों के लिए बैलगाड़ी का उपयोग किया जाता था। गाँव की सड़कें कच्ची थी। लोग अक्सर पैदल ही कहीं आया-जाया करते थे। गाँवों में लोगों के घरों में शौचालय नहीं हुआ करता था। खेतों को ही शौचालय के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। कृषि कार्य के लिए बैल ही एक मात्र सहारा था। लोग कृषि कार्य, जलावन, खाद, दूध, दही आदि के लिए गाय, भैंस, बकरी पालते थे। लोग प्राकृतिक जिन्दगी जीते थे। उनमें ईर्ष्या द्वेष की भावना कम होती थी। वे दूसरों के दुःख से दुःखी होते थे।

आज भी एक समय है जब लोग भौतिकवादी तथा निजता की जिन्दगी जीते हैं। अब गाँव भी पहले वाला गाँव नहीं रह गया है। वह भी अब आधा गाँव तथा आधा शहर हो गया है। गाँव की उन्नति हो गई है। वहाँ भी अब प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खुल गए हैं, तथा अच्छे-अच्छे डॉक्टरों की पदस्थापना हो गई है। सरकारी स्कूल के साथ-साथ निजी स्कूल भी खुल गए हैं। शिक्षा के प्रति लोगों में जागृति आ चुकी है। अब लोग कृषि कार्य के अतिरिक्त आय के अन्य स्रोतों की तलाश में भी लगे रहते हैं। कृषि कार्य हेतु अब वे बैलों पर आश्रित नहीं हैं। अनेक प्रकार के कृषि यंत्रों का निर्माण हो चुका है तथा लोग उसका इस्तेमाल भी

करते हैं। विज्ञान के विकास से अनेक प्रकार के जैविक तथा रासायनिक खाद का प्रयोग होने लगा है। गाँवों में भी ऊँची-ऊँची इमारतों का निर्माण होने लगा है। लोगों के घरों में शौचालय भी बनने लगे हैं। लोग पीने के पानी के लिए बोरिंग तथा चापाकल का सहारा लेने लगे हैं। अब कुँआ पर से निर्भरता खत्म होते जा रहा है। गाँवों में भी आवागमन के साधनों के रूप में विभिन्न प्रकार के मोटर वाहनों का इस्तेमाल होने लगा है। लेकिन उस समय की जिन्दगी और आज की जिन्दगी में अन्तर है। उस समय लोग अभाव में रहते हुए भी ज्यादा खुश थे। उनकी जिन्दगी में तनाव एवं अवसाद नहीं था। वे थोड़ा में भी संतुष्ट थे। लोगों का विचार उच्च हुआ करता था। उनमें “वसुधैव कुटुम्बकम्” की भावना थी। आज उसमें कमी आते जा रहा है। संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ले रहा है। संयुक्त परिवार में बूढ़े-बुजुर्गों के प्रति सम्मान तथा सेवा की भावना रहती थी, वह धीरे धीरे समाप्त हो रहा है।

इस तरह पहले का जीवन और आज के जीवन में बहुत अन्तर आ गया है। परिवार और समाज की संरचना में परिवर्तन आ गया है।





बंशीधर मिश्रा
वरीय लेखा अधिकारी

संकीर्ण डगर

संकीर्ण डगर है
यह जीवन पथ।
प्रयत्न तू करता जा
ऐ राही।
होगी सुलभ यह
हरदम तुमको,
मेहनत के मतवाले
ऐ राही।
है कठिन उन्हीं को
जीवन की डगर
जो इस पथ पे डरना सीखे हैं।
काँटों से भरे
सँकरे पथ से
पीछे हटना ही सीखे हैं।
डरना न कभी है
जीवन पथ से
होगी आसान यह कर्मों से।
संकीर्ण डगर यह भागेगी ही,
आ आकर तूझे ललकारेगी ही।
विजय तूझे ही पाना है
जीवन का कर्ज चुकाना है
सब करते हुए इस सँकरे पथ पे
अपनों के लिए मर जाना है।

हैं सार्थक तभी यह जीवन अपनी
मिले सफलता निज कर्मों की
कर कर्म प्रिय राही मेरे
इस अर्थपूर्ण अभिनंदन की।





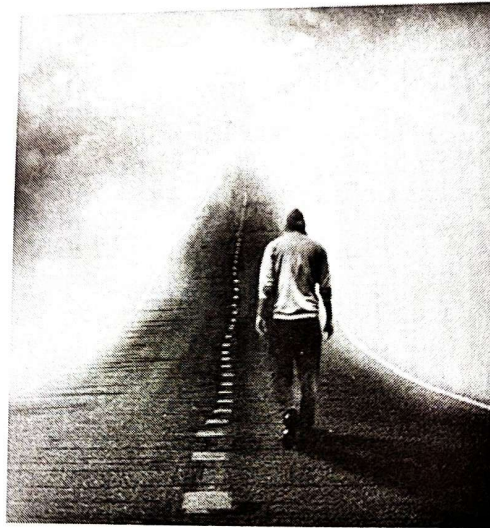
प्रतिमा कुमारी
सहायक पर्यवेक्षक



तन्हा सफर



तन्हा सफर है, मंजिल है दूर
दिल में है एक जज्बा, एक सुरूर
ख्वाहिश, अंधेरे में एक लौ रौशन करने की
कारवां, लेकर चलूं खुशियों के आसमां में
पंछी बनूं मैं उस गगन की
मैं दर्द का मरहम बनूं
आंसूओं की बारिश में
कर सकूं तलाश एक इंद्रधनुष
रब से है बस मेरी यही दुआ
ऐ खुदा! ऐसी नेमत मुझपर बनाये रखना
कि बन सकूं मैं इस काबिल
जो अंधेरों से जूझने वाली हर जिंदगी में
एक आशा की लौ कर सके रौशन।





स्वाति सौरभ
सुपुत्री- श्री उमेश चौधरी,
वरीय लेखा अधिकारी

मुम्बई- एक मायानगरी

मुम्बई जिसे हम सपनों का शहर भी बोलते हैं, पहले इसे बॉम्बे या बम्बई कहा जाता था। इसके और भी कई नाम हैं जैसे- मायानगरी, हादसों का शहर आदि। यह भारत की सबसे आकर्षक नगरी है जो यहाँ एक बार आता है वह यहाँ की चकाचौंध को छोड़कर दुबारा वापस नहीं जाना चाहता। इस नगरी में एक ऐसी माया है, ऐसा मोह है जो हर शख्स को यहाँ से बाँधे रखती है। मुम्बई फैशन, बॉलीवुड आदि के लिए ज्यादा प्रसिद्ध है। यहाँ घूमने के लिए बहुत अच्छे-अच्छे स्थान हैं- जैसे फिल्म सिटी, जुहू बीच, मरीन ड्राइव आदि। दूर-दूर से लोग यहाँ घूमने आते हैं। देश के अन्य भागों की जीवन पद्धति की तुलना में यहाँ की जीवन पद्धति काफी अलग है। यहाँ की संस्कृति भी बहुत हद तक पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। मुम्बई की नाईटलाईफ की चर्चा तो हर जगह होती है और सभी लोग यहाँ की चकाचौंध भरी जिन्दगी को जीना चाहते हैं। लेकिन यह इतना आसान नहीं होता। अपनी आँखों में सपने लिए हजारों लोग इस शहर में आते हैं जहाँ अपना कोई नहीं होता और अगर किसी का कोई है भी तो मुम्बई के आम आदमी के घरों में इतनी जगह नहीं होती कि वहाँ दूसरा कोई रह सके। हकीकत तो यह है कि घर तो घर मुम्बई के सड़कों या फुटपाथ पर भी रात गुजारना आसान नहीं होता। यहाँ गरीबों और आम आदमियों के घरों का हाल किसी से छुपा नहीं है। मुम्बई शहर का नाम सुनते ही हमारे दिमाग में आता है- बड़ी-बड़ी ऊँची इमारतें, अभिनेता, सिनेमा आदि। लेकिन इन सब के साथ-साथ यहाँ की चॉल, झुग्गी-झोपड़ी या स्लम के हालात को अनदेखा नहीं किया जा सकता। इन जगहों पर गन्दी, तंग गलियाँ, खुली नालियाँ, छोटे-छोटे घर और आस-पास कूड़े का ढेर होता है। यहां घर के नाम पर एक कमरे में पांच से छह लोग एक साथ रहते हैं। और तो और एक ही बाथरूम का प्रयोग करते हैं। यहां कई बीमारियां पनप रही होती हैं। मुम्बई का यह भी एक पहलू है जिसे कोई झूठला नहीं सकता।

हजारों लोग अपना गांव, अपना घर छोड़कर मुम्बई आते हैं ताकि वे अपना सपना पूरा कर सकें, लेकिन यहां कई-कई रातें इन लोगों को भूखे पेट गुजारनी पड़ती है। इनमें अधिकतर के पास इतने पैसे नहीं होते कि मुम्बई जैसे शहर में वे एक अच्छे से किराए के मकान में भी रह सकें। ऐसे लोग स्लम या झुग्गी झोपड़ी में रहने को मजबूर हो जाते हैं। यहां कुछ ही लोग अपने सपने को पूरा करने में कामयाब हो पाते हैं जब कि ज्यादातर लोग अपने सपने को भूल कर दो वक्त की रोटी कमाने में इतना व्यस्त हो जाते हैं कि वे कोई भी छोटा बड़ा कार्य करने लगते हैं और उन लोगों के लिए उस काम से निकलना मुश्किल हो जाता है। रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए यहां लोगों को एक दौड़ सी लगानी पड़ती है।

दौड़ के नाम से हमारे दिमाग में मुम्बई की लोकल ट्रेनों का ख्याल जरूर आता है। इन ट्रेनों के एक डिब्बे में लगभग 200 से अधिक लोग दूँसे होते हैं। इनमें इतनी भीड़ इसलिए होती है क्योंकि काम करने वाले स्थानों से सभी लोग बहुत दूर रहते हैं और सभी को अपने काम के लिए सुबह निकलना पड़ता है और शाम को घर के लिए वापस लौटना रहता है। मुम्बई की सड़कों पर इतनी भीड़ तथा जाम होती है कि आम आदमी या गरीब लोकल ट्रेनों से सफर करना ज्यादा आसान समझता है। यह भाग-दौड़ मुम्बई के लगभग हर व्यक्ति को करनी पड़ती है चाहे वह किसी कंपनी में काम करने वाला हो, मजदूर हो या फिर किसी दफ्तर का कर्मचारी।

मुम्बई को सपनों का शहर तो हम सब मानते हैं पर कहते हैं न कि सपना देखना जितना आसान होता है, उसे पूरा करना उतना ही मुश्किल। खास कर के उन लोगों के लिए जो छोटे शहरों या गांवों से बड़े-बड़े सपने लेकर यहां आते हैं।

मुम्बई की चर्चा करने पर बॉलीवुड की बात कैसे नहीं होगी। लाखों की संख्या में लड़के-लड़कियां सिनेमा में अभिनेता या अभिनेत्री बनने का सपना लिए मुम्बई आते हैं। इनमें से अधिकतर लोग ऐसे हैं जिनके पास हुनर रहते हुए भी वे अभिनेता बनने में असफल हो जाते हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं जैसे - बाहर से आए हुए लोगों की शारीरिक संरचना, मुम्बई में व्याप्त भारी प्रदूषण, भाई-भतीजावाद आदि। बॉलीवुड में भाई-भतीजावाद बहुत पहले से चली आ रही है। मुम्बई में हजारों लोग सुबह से शाम तक ऑडिशन के लिए लाइनों में खड़े रहते हैं, लोकल ट्रेनों के डिब्बे में धक्के-मुक्के खाते हैं। इनमें ऐसे कई लोग हैं जिनके पास हुनर है पर चूंकि वह किसी बड़े अभिनेता का बेटा या बेटी नहीं है तो उसे इन सब परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वहीं दूसरी ओर किसी अभिनेता या अभिनेत्री के बेटा बेटी को बिना किसी संघर्ष के बॉलीवुड में स्थान मिल जाता है। वे बहुत आसानी से अपनी पहचान बना लेते हैं फिर चाहे उसमें अभिनय का कोई हुनर हो या ना हो। इसी भाई-भतीजावाद के कारण बहुत लोगों का अभिनय का सपना पूरा नहीं हो पाता और वे लोग आत्महत्या जैसे कदम उठाने को मजबूर हो जाते हैं। परन्तु ऐसे भी कई लोग हैं जो निरंतर संघर्ष कर अपने दम पर बॉलीवुड में अपनी पहचान बनाई। ऐसे लोगों से हमेशा सीख लेनी चाहिए। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो जूनियर कलाकार बन के खुश हो जाते हैं, तो कुछ मॉडलिंग करने लगते हैं, या फिर किसी को साइड रोल मिल जाता है। मुम्बई कभी थमता नहीं कभी रुकता नहीं है, तो यहां के लोग भी हर रोज भाग-दौड़ कर अपना परिवार चलाते हैं। यही है मुम्बई-एक मायानगरी।





धीरज कुमार
वरीय लेखकार



बाधाओं से संघर्ष के पश्चात सफलता



माधोपुर ग्राम में बटुक नाम का एक गरीब किसान रहता था। उसकी फसल अक्सर खराब हो जाया करती थी। कभी बाढ़ आ जाया करती थी तो कभी सूखे की वजह से उसकी फसल बर्बाद हो जाया करती। कभी गर्मी बेहद होती तो कभी ठण्ड इतनी होती कि वो बेचारा कभी भी अपनी फसल को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर पाया।

एक दिन किसान दुखी होकर मंदिर में जा पहुंचा और भगवान की मूर्ति के आगे खड़ा हो कर कहने लगा भगवान बेशक आप परमात्मा हैं, लेकिन फिर भी लगता है आपको खेती बाड़ी की जरा भी जानकारी नहीं है। कृपया करके एक बार बस मेरे अनुसार मौसम को होने दीजिये फिर देखिये मैं कैसे अपने अन्न के भंडार को भरता हूँ। इस पर आकाशवाणी हुई कि “तथास्तु वत्स। जैसे तुम चाहोगे आज के बाद वैसा ही मौसम हो जाया करेगा और ये साल मैंने तुमको दिया।” किसान बड़ा खुशी खुशी घर आया। क्या होता है कि उस बरस भगवान ने कुछ भी अपने अनुसार नहीं किया और किसान जब चाहता धुप खिल जाया करती और जब वो चाहता तो बारिश हो जाती, लेकिन किसान ने कभी भी तूफान को और अंधड़ को नहीं आने दिया। बड़ी अच्छी फसल हुई। पौधे बड़े लहलहा रहे थे। समय के साथ साथ फसल भी बढ़ी और किसान की खुशी भी।

आखिर फसल काटने का समय आ गया। किसान बड़ी खुशी से खेतों की ओर गया और फसल को काटने के लिए जैसे ही खेत में घुसा, बड़ा हैरान हुआ और उसकी खुशी भी काफूर हो गयी, क्योंकि उसने देखा कि गेहूँ की बालियों में एक भी बीज नहीं था। उसका दिल धक् से रह गया। किसान दुखी होकर परमात्मा से कहने लगा “हे भगवान ये क्या?” तब आकाशवाणी हुई कि “ये तो होना ही था। वत्स तुमने जरा भी तूफान आंधी ओलो को नहीं आने दिया जबकि यही वो मुश्किलें हैं जो किसी बीज को शक्ति देता है और वो तमाम मुश्किलों के बीच भी अपना संघर्ष जारी रखते हुए बढ़ता है अपने जैसे हजारों बीजों को पैदा करता है, जबकि तुमने ये मुश्किलें ही नहीं आने दी तो कैसे बढ़ता ये बताओ तुम?” भगवान ने कहा—बिना किसी चुनौतियों के बढ़ते हुए ये पौधे अंदर से खोखले रह गये। यही होना था। यह सुनकर किसान को अपनी गलती का अहसास हुआ। जिन्दगी में जब तक बाधाएं नहीं आती तब तक मनुष्य को खुद की काबिलियत का भी अंदाजा नहीं होता कि वो कितना बेहतर कर सकता है। अगर बाधाओं से पार जाने के लिए वो अपनी जी जान लगा दे तो मंजिल कहीं अधिक दूर नहीं होती।





प्रीति कुमारी
डी० ई० ओ०

लड़की होना वरदान या अभिशाप

हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज है। इस समाज में पुरुष जो चाहे वो कर सकता है लेकिन एक स्त्री के लिए यह संभव नहीं है। एक स्त्री को इस समाज में रहने के लिए समाज द्वारा बनी बनाई परीपार्टी पर ही चलना होगा। यह कहानी उन दो बहनों की है जिसमें से किसी एक के हिस्से को वरदान शब्द से संबोधित किया गया तो दूसरे को अभिशाप शब्द से।

जिया और रिया दो बहनें थीं। जिया बड़ी बहन का नाम था और रिया छोटी बहन का। जिया और रिया अपने माता-पिता के साथ रहती थीं। एक दिन जिया की शादी हो गई और वह चली गई। जिया के विवाह के बाद, उसके पिता की किसी बिमारी की वजह से आकस्मिक मृत्यु हो गई। तो सारा बोझ रिया पर आ गया। घर की आर्थिक स्थिति अत्यधिक खराब हो गई थी। इसी को देखते हुए रिया ने बाहर किसी कम्पनी में काम करने के बारे में सोचा। वह काम करने जाने लगी। कुछ दिनों बाद उसकी माँ को रिया के खिलाफ कुछ बातें सुननी पड़ी। क्योंकि रिया कभी-कभी देर रात घर लौटती, तो कभी उसके बॉस उसे घर छोड़ देते। रिया की माँ को यह पता था कि कुछ गलत नहीं कर रही है क्योंकि रिया उनसे कोई बात नहीं छुपाती थी। वह जब भी कभी देर रात घर आती तो वह अपनी माँ को बता देती थी। लेकिन कुछ लोग रिया के खिलाफ गलत शब्द का प्रयोग करते।

जैसे-जैसे दिन गुजरते गए यह बात भी बढ़ती गई। रिया बहुत ज्यादा ही परेशान रहती थी। उसे लोगों के आस पड़ोस की बातें सुनने मिलते थे। उसकी माँ ने भी रिया को बहुत समझाया कि लोगों की बातों को वह सुन कर अनसुना कर दे। या फिर उन्हें जबाब दे। लेकिन रिया से यह सहन नहीं हो पाया। वह एक दिन जब घर आ रही थी, तब कुछ लड़कों ने उसके साथ बदतमीजी की और उसे अपशब्द बोले, लेकिन रिया सिर्फ रो रही थी।

जब वह घर पहुँची तो बिना किसी से कुछ कहे, सीधे अपने कमरे में चली गई। जब उसकी माँ ने रिया को आवाज लगाई, तो अन्दर से कोई आवाज नहीं आई, बिल्कुल सन्नाह जब उसकी माँ ने अंदर जा कर देखा तो वह पँखे से झूल रही थी। वो रात उसके जीवन की आखिरी रात थी।

हमारे समाज में स्त्रियों को देवी का रूप माना जाता है लेकिन हकीकत कुछ और बता करती है। समाज की यह कैसी विडंबना है कि उसे एक तरफ दुर्गा, सरस्वती, पार्वती तथा अन्य देवियों के नामों से पुकारा जाता है तथा फिर उसे किसी समाज में उपेक्षित भी किया जाता है। लड़की होना आसान नहीं है यह वरदान है। लेकिन रिया के मृत्यु के बाद यह समाज

किसी के लड़की होने पर अभिशापित हो गया ।

आज जरूरत है समाज को बदलने की, अगर हम किसी को जीवन नहीं दे सकते हैं तो उसे मृत्यु का रास्ता चुनने के लिए विवश भी नहीं कर सकते ।





उत्तम कुमार
वरीय लेखाकार



ॐ

ॐ शब्द सनातन धर्म के वैदिक मंत्रोच्चारण का प्रमुख अंग है। वैसे तो यह स्वच्छंद रूप से ही प्रमुख मंत्र है। ॐ का उच्चारण मात्र से ही प्राणी के भीतर एक विशेष प्रकार की अनुभूति उत्पन्न होने लगती है। यह कोई साधारण शब्द नहीं है बल्कि इसमें अलौकिकता का वास है। जब हम ॐ शब्द का उच्चारण करते हैं तो प्राण वायु हमारे शरीर के भीतर आती है जबकि अन्य किसी भी शब्द के उच्चारण में प्राण वायु शरीर से बाहर निकलती है। इसकी व्यापकता का पता हम इस बात से भी ले सकते हैं कि जब हम आसमान की ओर देखते हैं, उसकी अनंत गहराइयों को देखते हैं। उसकी ऊंचाई और गहराई इतनी है कि जहां हमारे मन कि आंखें भी उसका स्पर्श नहीं कर सकती है। वह स्पष्ट जाएगी किन्तु आसमान कि ऊंचाई और गहराई का अंत नहीं लगा पाएगी। वहीं ब्रह्मांड में निरंतर कि ध्वनि गूँजती रहती है। जिस बात की पुष्टि नासा के वैज्ञानिक भी करते हैं। रोचक बात यह है कि का संबंध भगवान शिव से है। यह भगवान शिव के तांडव नृत्य का द्योतक भी है। सनातन धर्म मान्यताओं के अनुसार कैलाश मानसरोवर के समीप कैलाश पर्वत उनका निवास स्थल है। जहाँ ध्वनि लगाने पर ॐ की ध्वनि के साथ-साथ डमरु की आवाज सुनाई देती है। उसी के समीप एक ॐ पर्वत है। जिस पर प्रत्येक वर्ष बर्फ पिघलने के उपरांत प्राकृतिक रूप से ॐ की आकृति उभरती है। कैलाश पर्वत दुनिया भर के वैज्ञानिकों के लिए कौतूहल एवं शोध का विषय भी रहा है। उनका भी मानना कि यहाँ किसी अलौकिक शक्ति का वास है। जिसका कारण है कि पर्वतारोही दुनियाँ की सबसे ऊँची चोटी हिमालय पर तो चढ़ जाते हैं किन्तु हिमालय से 2000 मीटर कम ऊँचाई वाले कैलाश पर्वत नहीं चढ़ पाते हैं। वह बताते हैं कि कोई शक्ति है, जो उनका मार्ग रोक देती है।

इस तरह से हम देखते हैं कि विज्ञान को चुनौती हमेशा सनातन धर्म से ही मिलती है। फिर सच क्या है? यह आप भी जानते हैं और मैं भी। यह कलयुग है जहाँ सत्य बोलना मना है, पर कहे की है। अंत में एक बात और कहना चाहता हूँ। ईश्वर सत्य है, सत्य ही शिव है और शिव ही सत्य है।

सत्यम शिवम सुंदरम्।





धीरज कुमार
वरीय लेखाकार

सोमेश पशु पक्षियों का व्यापार किया करता था। एक दिन उसे पता लगा कि उसके गुरु को पशु पक्षियों की बोली की समझ है। उसके मन में ये खयाल आया कि कितना अच्छा हो अगर ये विद्या उसे भी मिल जाये तो उसके लिए भी यह फायदेमंद हो। वह पहुँच गया अपने गुरु के पास और उनकी खूब सेवा पानी की और उनसे ये विद्या सिखाने के लिए आग्रह किया। गुरु ने उसे वो विद्या सिखा तो दी, लेकिन साथ ही उसे चेतावनी भी दी कि अपने लोभ के लिए वो इसका इस्तेमाल नहीं करे, अन्यथा उसे इसका कुफल भोगना पड़ेगा। व्यक्ति ने हामी भर दी। वो घर आया तो उसने अपने कबूतरों के जोड़े को यह कहते हुए सुना कि मालिक का घोड़ा दो दिन बाद मरने वाला है। इस पर उसने अगले ही दिन घोड़े को अच्छे दाम पर बेच दिया। अब उसे भरोसा होने लगा कि पशु पक्षी एक दूसरे को अच्छे से जानते हैं।

अगले दिन उसने अपने कुत्ते को यह कहते हुए सुना कि मालिक की मुर्गियाँ जल्दी ही मर जाएँगी तो उसने बाजार जाकर सारी मुर्गियों को अच्छे दामों पर बेच दिया। कई दिनों बाद उसने सुना कि शहर की अधिकतर मुर्गियाँ किसी महामारी की वजह से मर चुकी हैं। वो बड़ा खुश हुआ कि चलो मेरा नुकसान नहीं हुआ। हद तो तब हो गयी, जब उसने एक दिन अपनी बिल्ली को यह कहते हुए सुना कि हमारा मालिक अब तो कुछ ही दिनों का मेहमान है तो उसे पहले तो विश्वास ही नहीं हुआ, लेकिन बाद में अपने गधे को भी उसने वही बात दोहराते हुए सुना तो वो घबरा कर अपने गुरु के पास गया और उनसे बोला कि मेरे अंतिम क्षणों में करने योग्य कोई काम है तो बता दें, क्योंकि मेरी मृत्यु निकट है।

इस पर गुरु ने उसे डाँटा और कहा कि मूर्ख मैंने पहले ही तुझसे कहा था कि अपने हित के लिए इस विद्या का उपयोग मत करना, क्योंकि सिद्धियाँ न किसी की हुई हैं और किसी की होंगी। इसलिए मैंने तुझसे कहा था कि अपने लाभ के लिए और किसी के नुकसान के लिए इनका प्रयोग मत करो।





प्रीति कुमारी
डी० ई० ओ०

बेड़ियां

डाल कर मेरे पैरों में बेड़ियां
वो कहते तुम चलती क्यों नहीं
ख्वाहिशे अनगिनत है मेरी
वो कहते तुम बुनती क्यों नहीं
जीना चाहती हूँ मैं जिन्दगी अपने तरीके से
इन रीति- रिवाजों से मुक्त मैं तब भी नहीं
और अब भी नहीं।

क्या दोष है अपना, सिर्फ यही की जन्मी हुई
मैं, एक स्त्री में, जमाने की इस लड़ाई में क्यों
शिकार होती रही, सिर्फ बेटियाँ।

कोई हमसे भी तो पूछे कि हमने क्या चाहा,
बचपन से लेकर अभी तक हमने सिर्फ उड़ना
चाहा, उड़ना चाहा, पुरुष हमने अपने संस्कारों को
साथ, ले कर , लेकिन संस्कारों के नाम पर
ये छलती रही हमे बेड़ियां।

कभी हमारे हकदार, तो कभी
हमारे हमसफर बदल दिए गए
बेड़ियों के नाम पर
ये क्या-क्या करते चले गए
क्या हम कभी भी अपने जीवन
का या फिर हर कदम पे
मिलती रहेगी ये बेड़ियां.....सिर्फ बेड़ियां।





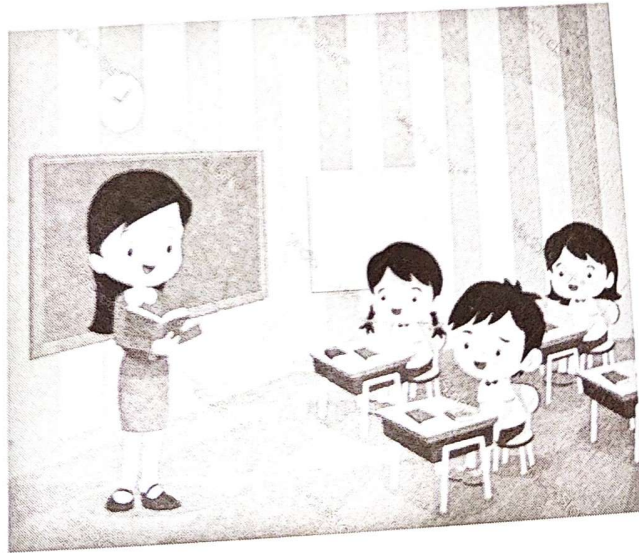
रवि कुमार
एम. टी. एस.

तेरे चरणों की सेवा

तेरे चरणों की सेवा है गुरुवर मुझे दे दो।
तेरे चरणों की सेवा है गुरुवर मुझे दे दो
पानी पानी में शिव-शिव का वो गुण मुझे दे दो।

तेरे चरणों की सेवा है गुरुवर मुझे दे दो
में भूला हुआ राही, नहीं कोई सहारा है।
मँझधार में है कश्ती और दूर किनारा है।
मुझे मंजिल मिल जाए वो।
वो मंत्र मुझे दे दो।

तेरे चरणों की सेवा है गुरुवर मुझे दे दो।
पानी में शिव-शिव का वो गुण मुझे दे दो।
में भूला हुआ राही, नहीं कोई सहारा है।
मँझधार में है कश्ती और दूर किनारा है।
मुझे मंजिल मिल जाए वो।
वो मंत्र मुझे दे दो।





अर्चना
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

थी परवाहों की गोद में सोती
कैसे-कैसे नखरे ढोती
अनकही चाहतें पूरी होती
थी जिन गलियों की रैनक
कोने-कोने में बसी जो महक
छूट गई आधी वहीं
अटूट हुई टूट यूहीं।

जन्मों के नाते छोड़ आए
अजनबियों को बेधड़क अपनाए
अनवरत अपनापन लुटाए
जो छूटा गैर हुआ
मिला वो अपना नहीं
उसकी जिंदगी का ये फलसफा
हकीकत है कोरा सपना नहीं
फिर भी दिल में ज़जबात बचाए
अथक बढ़ती सबकुछ दबाए।

डालियां बिछड़ अपने पौधों से
स्वयं पौधा बन खिलतीं
दुर्लभ वो पौधे होते
बिछड़ जड़ से जो पुनः खड़े होते
शक्ति, हाँ, वो शक्ति

जीत कर वीरांगना
हार से जिसके सजता घर अंगना।

बेटी, बहन, भार्या, जननी
निर्बल कैसे? कैसे निर्बल?
वो जो है जीवन दायनी
उसकी सबलता का प्रमाण
प्राण-प्राण में विद्यमान
शूरवीरों की अदम्य शक्ति उससे
विद्वानों का प्रखर ज्ञान
जीवन की आधार स्तंभ
क्यों खुद से ही है अनजान।

सींचती पल-पल पिला लहू जल
जाने किस मापदंड पर
कहते उसको लोग निर्बल
चट्टानों की मजबूती से
जकड़- पकड़ जड़ वो खड़ी
खुद की भूख परे कर
बलवानों को खिलती
नित नींदें न्योछावर कर
सूरमाओं को सुलाती
अपनों की खुशियों की बलिवेदी पर

खुद की खाहिशें जी भर लुटाती।

वही तो शक्ति पुंज है
जिसकी खामोशियों की
चहु ओर श्रवण ये गूंज है
वरना तो ये जमीं होती बंजर
कहाँ होता कोई सिकंदर।

सूरज की पहली किरण
चंद्रमा की चांदनी
घर आंगन की रौनक
दफ्तरों की शान भी
माली ऐसी बगिया की
हवा, धूप और छाँव भी
सबल वो पृथ्वी सरीखी
अत्याचारों के बोझ समेट रखी।

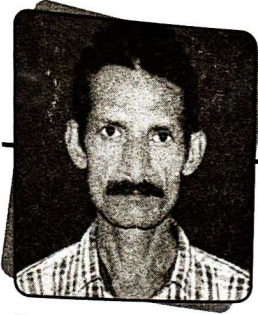
गुलाब सा कांटों को ओढ़े
जीवन मधुवन सुगंधित करती
संबंध पुष्प डोर
खुद में सबको पिरो रखती।

नियति नहीं ये नियत
हर मोड़ पर किसी न किसी की
बनती रही बसीहत

संजोया सबने अपने तरिके
कोई देखे जरा उसके जैसे जी के
पिता, भाई, पती, पुत्र
सबों की वो विजय सूत्र।

उन्मुक्त वो गगन उसका भी है
चाहते-स्वावलंबन उसकी भी है
छीनना उसे गवारा नहीं पर
जीत की जिदद तो उसकी भी है
माना, माना स्नेह प्रेम की मूरत है
पर सम्मान, स्वभिमान और अपनी
पहचान पर हक तो उनका भी है।





आफताब अंसारी

स० पर्यवेक्षक

तीन पहर

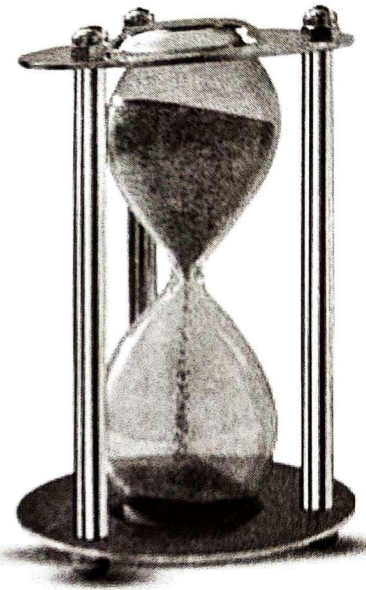
तीन पहर तो बीत गये,
बस एक पहर ही बाकी है।
जीवन हाथों से फिसल गया,
बस खाली मुट्ठी बाकी है।

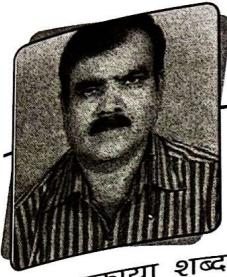
सब कुछ पाया इस जीवन में,
फिर भी इच्छाएं बाकी हैं,
दुनिया से हमने क्या पाया,
यह लेखा-जोखा बहुत हुआ,
यह जग ने हमसे क्या पाया,
बस ये गणनाएँ बाकी हैं।

इस भाग दौड़ की दुनिया में,
हमको इक पल का होश नहीं,
वैसे तो जीवन सुखमय है,
पर फिर क्यों संतोष नहीं।
क्या यूँ ही जीवन बीतेगा,
क्या यूँ ही साँसे बंद होंगी ?
औरों की पीड़ा देख समझ
कब अपनी आँखें नम होंगी ?
मन के अंतर में कहीं छिपे
इस प्रश्न का उत्तर बाकी है।

मेरी खुशियाँ मेरे सपने
मेरे बच्चे मेरे अपने
यह करते-करते शाम हुई
इससे पहले की शाम ढले
कुछ दूर पराई बस्ती में

एक दीपक जलाना बाकी है।
तीन पहर तो बीत गये
बस एक पहर तो बाकी है।
जीवन हाथों से फिसल गया
बस खाली मुट्ठी बाकी है।





बकाया शब्द से आपके मन-मस्तिष्क पर में कैसा चित्र/विचार उभरता है ? सरकारी क्षेत्र के कर्मियों के लिए कोविड-19 के कारण रोके गए महंगाई भत्ते की किस्त तो बकाया का पर्याय ही बन गया है। जब आप इस लेख को पढ़ रहे होंगे तबतक हो सकता है कि रुके महंगाई भत्ते पर सरकार का कोई निर्णय आ जाए, तो भी कोविड-19 के साथ साथ महंगाई भत्ते की कटौती की चर्चा लंबे समय तक होती रहेगी। ऋणजीवी तो किस्त की संख्या, किस्त की राशि, रिजर्व बैंक की दर संबंधी नई घोषणा से किस्तों में होने वाले घटत/ बढ़त की गणना में इस कदर तल्लीन रहते हैं कि किस्त की अदायगी / प्राप्ति के सिवाय बकाया का कोई दूसरा अर्थ सोच ही नहीं सकते। कुछ ऋणदाता सूद और ब्याज की गणना मिस्टर जितना श्रम और समय देते हैं अगर उसका करोड़ों हिस्सा भी न्यूटन और आइन्स्टाइन लगते तो आज हमलोग भले ही एकीसवीं सदी में रह रहे हों, तइसवीं शताब्दी के तकनीक और सुख सुविधा का उपभोग कर रहे होते। भिन्न भिन्न लोग बकाया का अर्थ विभिन्न तरह से लगते हैं। संक्षेप में अधिकांश लोग बकाया का अर्थ आर्थिक लेन-देन से ही संबंधित मानते हैं। क्या आप भी यही अर्थ लगाते हैं ? बकाया के अतिरिक्त एक और शब्द फगा का भी उल्लेख इस लेख में आया है। आप इन दोनों ही शब्दों का अर्थ अपने हिसाब से निर्धारित करें और उसकी तुलना करें इस लेख में उन शब्दों के अर्थ से।

मुंशी प्रेमचंद की एक सुप्रसिद्ध रचना है—।। “बड़े घर की बेटी”। हिन्दी साहित्य में थोड़ी सी भी रुचि रखने वाले इस कहानी से अनभिज्ञ नहीं होंगे। हिन्दी साहित्य पर किए गए अनेक शोधों से यह तथ्य उजागर हुई है कि एक औसत बुद्धि वाला पाठक भी इस कानी को एक बार पढ़ ले तो उसके मानस पटल पर यह जीवन भर अंकित रहता है। इस सशक्त और प्रभावी कहानी की रचना बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में की गई थी, जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था तथा समाज में कई कुरीतियाँ हावी थी। इस कहानी में लेखक ने पुरुषवादी सोच पर प्रहार करते हुये दिखाया है कि परिवार में उत्पन्न हुये विवाद को परिवार के तीनों पुरुष सदस्य सुलझाने में असफल तो रहते ही हैं इसे और उलझा देते हैं, जबकि आनंदी अपने सूझ बुझ से टूट के कगार पर खड़े परिवार को न सिर्फ एकजुट रखने में सफल होती है बल्कि आस पड़ोस से जमा हुये तमाशबीनों को भी अपनी गुणों का लोहा मनवाती है। तभी त दोनों भाइयों के मिलन पर पहले बेनीमाधव एवं उसके बाद सारा गाँव कहता है—बड़े घर की बेटी ऐसी ही होती है। बुजुर्ग महोदय लगातार बोले जा रहे थे। इन बातों का क्यों उल्लेख कर रहे थे, मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। आगे उन्होंने कहा अगर तुम इस कहानी पढ़े हो तो तुम्हें याद होगा श्रीकण्ठ और लालबिहारी इस कहानी के दो प्रमुख पात्र लालबिहारी दोहरे बदन का सजीला जवान था भरा हुआ मुखड़ा, चौड़ी छाती थी उस श्रीकण्ठ की दशा ठीक इसके विपरीत थी। लालबिहारी में मौजूद इन नेत्रप्रिय गुणों को श्री ने बी० ए० के दो अक्षरों पर न्योछावर कर दिया था। इन दो अक्षरों ने उसके शरीर को वि

और कांतिविहीन बना दिया था ।.....

स्थानीय ईको पार्क में सुबह की सैर के बाद एक चबूतरे पर मैं थोड़ी देर बैठा करता था। वहीं ये बुजुर्ग महोदय छोटे छोटे रंगीन पत्थरों के साथ अटखेलियाँ करते हुये मुझे दिख जाते थे। उन रंगीन पत्थरों में वे इस कदर तल्लीन रहते कि उन्हें किसी चीज की सुन नहीं रहती। कभी कभार कोई पत्थर छिटककर मेरे तरफ आ जाता तो वे तत्क्षण उसे संभाल लेते। उनके बारे में जानने कि इच्छा से चबूतरे के करीब कबड्डी खेल रहे कुछ लड़कों से उनका संबंध में पुछताछ की। उन लड़कों ने बताया, ये काफी दिनों से यहाँ आ रहे हैं और हमलोगों से इन्हें एम०एम० कहते हैं। इससे अधिक कुछ जानकारी नहीं। मैंने पूछा ये एम०एम० क्या है। ठहाका लगाते हुये लड़कों ने कहा—मैटल महोदय। लेकिन मेरा आकलन था कि वे दिमागी तौर पर बिलकुल स्वस्थ हैं। रंगीन पत्थर, उनकी बदलती मुखकृति, पत्थरों के साथ उन लगाव व दृश्य मेरे मस्तिष्क में बार बार घुमड़ने लगा। कई बार मैंने उनसे बात करने की कोशिश की लेकिन उन्होंने इसकी कोई अहमियत नहीं दी। कहा जाता है किसी व्यक्ति के स्वभाव की परख गुस्सा अथवा अत्यधिक खुशी की स्थिति में आसानी से किया जा सकता है। इसी खयाल से एक दिन मैं उनकी ओर मुखातिब हो कहा ----“पत्थरों के साथ आप जादुगीरी बहुत अच्छे से कर रहे हैं, परंतु यह लोगों पर प्रभाव नहीं डाल पा रहा है। ठगी का ये नायाब तरीका एक नकली त्रिशूल कुछ रंगीन भभूत, लंबी सी नकली जटा और दाढ़ी रख लें। हो सके तो गेरुआ वस्त्र धारण कर लें, आपकी पूछ बढ़ जाएगी। आपका ये बिजुनस चल निकलेगा।” उन्होंने अपना चेहरा मेरी ओर कर दोनों आँखें खोल मुझे ऊपर से नीचे तक घूरा। मैं कुछ पल उसी स्थिति में उनके सामने खड़ा रहा। हालांकि यह भय मुझपर छाने लगा कि आध्यात्मिक शक्ति वाला तो नहीं है यह। और कुछ बोलने का साहस नहीं जूटा। मैं वापस घूम लौट आया।

वापस तो मैं घर आ गया, लेकिन दिनभर उनको कहे शब्द मेरे कानों में गूँजते रहे उनका चेहरा मेरी आँखों में घुमड़ता रहा, मैं उद्वेलित हो गया। क्या ज़रूरत थी उन्हें भला बुरा कहने की। कहीं वह जादू टोना वाला न निकले, अहित कर देगा। कल यदि उस बुजुर्ग के साथ उनके घरवाले आ जायें और मुझसे पूछें कि किस अधिकार से मैंने उसे भला बुरा कहा तो क्या जवाब दूंगा। मन में बुरे विचार आने लगे। मैंने फैसला कर लिया, कल सुबह जाकर सबसे पहले उस बुजुर्ग से कहे शब्दों के लिए माफ़ी मांग लूँगा। इन्तजार करने लगा रात कट जाती। अहले सुबह निर्धारित समय के पहले ही मैं पार्क पहुँच गया। सैर तो बहाना था मैं नजर उस चबूतरे पर थी जहाँ बुजुर्ग बैठा करते हैं। वे वहाँ नहीं थे शायद मैं जल्दी पहुँचा था मैं पैदल पथ पर चहलकदमी करने लगा, लेकिन नजरें चबूतरे पर ही टिका रहा। कब बुजुर्ग महोदय पधारें और मैं माफ़ी मांगूँ और मेरे दिल का बोझ हल्का हो, ऐसा विचार मन में चल रहा था। तीन चक्कर, चार चक्कर पांचवे चक्कर भी पैदल पथ का पूरा होने चला मगर वे नजर नहीं आये। वक्त काफी हो गया था, लोग सैर पूरी कर पार्क से निकालने भी लगे थे। मैं चबूतरे के पास कुछ समय रुका लेकिन बेकार, वे नजर नहीं आये। मायूस हो पार्क से निकल गया। दूसरे दिन भी स्थिति यही रही। मेरी बेचैनी बढ़ गयी। अनहोनी की आशंका मन में घर के

गयी। ऐसी मान्यता है कि अपना दुःख दर्द दूसरों के साथ साझा करने से कम होता है। मैंने भी ये सारी वृत्तान्त अपने एक निकट के मित्र को सुनायी, शायद कोई समाधान सुझाये। बड़े विचित्र हो भाई। क्या जरूरत थी अकारण किसी को भला बुरा कहने की। और मुखता तो देखो रोज वहां जा रहे हो। इसी को कहा जाता है आ बैल मुझे मार। वो तुम्हें बुकसान अवश्य पहुंचाएगा। जरा सोचो वो यह लिखकर आत्महत्या कर ले कि इन अपमानजनक शब्दों से उसे जीने की इक्षा नहीं रही तो तुम्हारा हश्र क्या होगा। अगर वो स्वाभिमानी निकला तो तुम्हारी बातों से आहत जरूर हुआ होगा। तनाव में सडक पर किसी दुर्घटना का शिकार हो अस्पताल में होगा, इसके जिम्मेदार तुम होगे, परिजन हर्जाना मांगेंगे। और तो छोड़ो जब वो बुजुर्ग इस बात को अपने बाल बच्चों को बताएगा तो क्या वे तुम्हारी आरती उतारेंगे। निश्चित रूप से मार-पीट करेंगे, मान हानि का तो यह मामला बनता ही है। आगे उन्होंने कहा मेरे पिताजी को कोई ऐसा बोल दे मैं उसे छोड़ू नहीं कोर्ट कचहरी कर दूँ। उन्होंने सख्त लहजे में कहा चार-छः महीने सैर वैर छोड़ दो, घर में दुबक जाओ। मामला अपने आप ठंडा हो जायेगा। ईको पार्क के आस पास तो किसी स्थिति में मत जाओ। कोर्ट में मैंने ऐसे अनेक मामले देखे हैं लोगों को परेशान होते, यह उतना आसान मामला नहीं है, समझदारी से काम लो। मेरे मित्र ने न सिर्फ मामले को उलझा दिया बल्कि मेरे अन्दर के डर और आशंका को बढ़ा दिया। छोट रोग बढ़ा इलाज। मैंने कहा दुबकने और छिपने के बजाय मैं वास्तविक स्थिति का सामना करना चाहता हूँ, तुम्हारी बातों में दम है, लेकिन जरूरी नहीं सही ही हो। मैं उनसे मिलूंगा जरूर ताकि मेरे मन का बोझ हल्का हो। अगर तुम्हारी बताई परिस्थितियां भी पैदा होती हैं तो मैं उसका सामना करूंगा। मैं कल फिर उनसे मिलने की कोशिश करूंगा। मेरे मित्र ने लम्बी सांस लेते हुए कहा दिमाग के बदले दिल कि बात सुनने की आदत तुम्हारी गयी नहीं है। बात की गंभीरता को समझ नहीं पा रहे हो, इन दो दिनों में उन लोगों ने तुम्हारी गतिविधि को जाना होगा, अगले दिन निश्चित रूप से अहित करेगा। मेरे मित्र ने आगे कहा बेफिक्र रहो अगले दिन मैं और फलां तुम्हारे साथ रहूंगा। जरा देखू तो कौन लोग हैं और क्या मंशा है उनकी? दोनों मेरे बचपन के मित्र हैं, बाहुबल में मुझसे इक्कीस नहीं पुरे सौ से ऊपर हैं। स्कूल के दिनों में कई बार इन लोगों ने जब भी जरूरत पड़ा है अपना परिचय दिया है। किसी एक के विरुद्ध शिकायत होती तो शिक्षक महोदय तीनों को बुलाते और चेतावनी तीनों को साथ साथ मिलती। उनका प्रस्ताव तो मुझे नहीं भा रहा था, फिर भी उनकी जिद के आगे मेरी एक न चली। हालाँकि बेवजह बखेड़ा नहीं खड़ा करने का वादा मैंने उनसे लिया। मन ही मन बढ़ा सुखद अहसास हुआ, यह जानकर कि उन रिश्तों में आज भी जान है, वर्ना आज के युग कौन किसी के लिए सोचता है।

अगले दिन हम तीनों सुबह पार्क पहुंचे। पार्क के अंदर मैं सहज भाव से जबकि दोनों किसी अनहोनी से निपटने वाले भाव से प्रविष्ट हुये। पार्क के अंदर आते ही मुझे बुजुर्ग महोदय अपने स्थान पर बैठे दिख गए। मैंने उनके पहनावे से उनकी पहचान दोस्तों से कारवाई और कहा तुमलोग यही दूरी बनाकर रहो मैं चबूतरे पर जाकर उनसे मिलता हूँ। दो दिन के बाद वो आज आया है। इसका अर्थ समझ रहे हो, पूरी तैयारी कर आया है। तुम यहीं झाड़ी की ओट में बैठे रहो। हम दोनों जाकर स्थिति को समझते हैं। उन दोनों ने चबूतरा एवं

इसके आस पास के माहौल का सूक्ष्मता से परीक्षण किया, कहीं कोई असमान्य गतिविधि नहीं दिखी। उनलोगों ने मुझे चबूतरे पर आने का संकेत किया और कुछ दूरी बनाकर वे लोग खड़े हो गए। मैं सीधे बुजुर्ग महोदय के सम्मुख खड़ा हो गया। अभिवादन का कोई जवाब दिये बिना बुजुर्ग महोदय ने कहा पिछले दिन तुम मुझसे कुछ जानना चाह रहे थे, मैं प्रश्न समझा नहीं, मैंने तुम्हें आवाज भी लगाई लेकिन तुम रुके नहीं। समझा नहीं या जान बूझकर उन्होंने ऐसा कहा, जो भी हो, दो तीन मिनट की बात से पिछले तीन दिनों का तनाव दूर हो गया। एकाएक उनके व्यवहार में आया परिवर्तन क्या वो अपमानजनक बोली गई बात ही थी। और अब प्रतिदिन प्रणाम पाती होता और इधर उधर की बातें होती। पहले वे गुमशुम बैठे रहते थे अब अपनी अनुभव हमलोगों के साथ साझा करते। प्रायः वे अपने घर विभिन्न कार्यालयों जहाँ जहाँ उनकी पोस्टिंग थी की बात किया करते। उनके बातचीत से यह पता चला कि वे अपने घर के सदस्यों से खुश नहीं हैं। उन्हें जो कमरा रहने को दिया गया है वो घर का स्टोर भी है। निजता के नाम पर दुसरे कमरे में जाने कि इजाजत उन्हें नहीं है पोते को गोदी लेने पुचकारने पर बहु बिगड़ जाती है। किसी दुसरे कि तौलिया ग्लास वे उपयोग नहीं कर सकते. अखबार उन्हें सबसे अंत में मिलता है, जबकि जीवनभर उन्हें ५ बजे सुबह अखबार पढ़ने की आदत है। बुजुर्ग महोदय के मित्र जब उनसे मिलने आते हैं तो उन्हें यथोचित सत्कार नहीं मिलता उसने अनेक ऐसी बातें बताई जिससे मन खिन्न हो गया। उनके बेटे और बहु के प्रति मन में आक्रोश जग गया। मेरी समझ में आ गया उनके गुमशुम रहने का कारण। कुपुत्र कहीं का नरक में भी चैन उसे नहीं मिले, ऐसे कोई व्यवहार करता है अपने खून के रिश्ते के साथ, मेरे मन में ऐसा विचार आया जिसे बहुत हद तक उस अनुभवी बुजुर्ग ने समझ लिया ऐसी स्थिति में बुजुर्ग महोदय बातचीत का प्रसंग बदल देते और कुछ ऐसी रोचक बात सुनाते कि माहौल खुशनुमा हो जाता। लोग हंसी रोक नहीं पाते। साथ में वे भी हँसते। ऐसा नहीं है कि वहाँ सिर्फ परेशानियों की ही चर्चा होती। समसामयिक, शास्त्र, राजनीति समेत अनेक मुद्दों पर पांडित्यपूर्ण चर्चा होती। चर्चा से उनके अथाह ज्ञान भंडार की झलक मिलती थी, बोलने की शैली ऐसी कि एक बार जो उनकी बातें सुन ले अगले दिन आये बिना रह नहीं सकता। यही कारण था कि करीब बीस पचीस लोग सैर के बाद उन्हें सुनने के लिये चबूतरे पर जमा हो जाते। एक दिन बुजुर्ग महोदय ने कहा, ये नए जमाने के लड़के काफी स्मार्ट होते हैं। मैंने इनलोगों को अपना नाम कभी नहीं बताया। पता नहीं कैसे जान गए, कबड्डी में विवाद होने पर कहते एम. एम. सर देखिये ये बेईमानी कर रहा है। इतना लगाव हो गया है इन बच्चों से कि मुझे निर्णायक कि भूमिका निभानी ही पड़ती है, बच्चे भी उनसे घुल मिल गए हैं। बात बात पर इन्हें हस्तक्षेप करना भी अच्छा लगता है। बातों बातों में मैंने यह जाना कि उनका नाम मुरली मनोहर है, वे केन्द्र सरकार के एक प्रतिष्ठित पद से सेवानिवृत्त हुए हैं और अपने बेटे बहु के साथ फ्लैट में रहते हैं। घनिष्टता बढी। उनके व्यवहार में परिवर्तन आया तो एक दिन मौका देखकर मैंने उन रंगीन आकर्षक पत्थरों के बारे में पूछ डाला। उनके चहरे पर निराशा का भाव उभर आया। लम्बी सांस लेकर उन्होंने बताया—इन पत्थरों को उन्होंने समुद्री तटों एवं नदियों से स्वयं चुना है काफी मेहनत से। अपनी पोस्टिंग के दौरान ओड़िसा और झारखण्ड के विभिन्न स्थानों से इसे जमा किया है। इन पत्थरों के साथ खेलकर उनका बेटा बड़ा हुआ है।

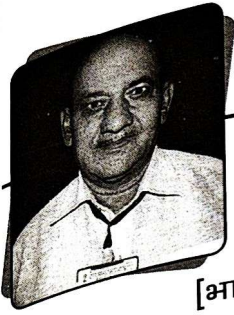
इन पत्थरों में बेटा का प्यार समाया हुआ है। साफ सफाई के नाम पर एक दिन उनकी बहु ने इसे बाहर फेंक दिया, तबसे इसे वे साथ में ही रखते हैं। इससे उन्हें बेटे के साथ होने का अहसास होता है। मैंने पूछा आप अपने पुत्र को समझाते क्यों नहीं? उन्होंने उलटे मुझसे सवाल किया—क्या तुम्हें साहित्य में रुचि है? मेरे हाँ कहने पर उन्होंने दूसरा सवाल किया—क्या तुमने मुंशी प्रेमचंद की कहानी “बड़े घर की बेटी” पढ़ी है? मैंने फिर कहा हाँ। उसके बाद उन्होंने धाराप्रवाह पांच-सात मिनट तक बोलते रहे, जिसका उल्लेख लेख के प्रथम पैरा में किया गया है। उन्होंने आगे कहा मुलभूत सिद्धांत कभी नहीं बदलते। उस जमाने के लड़के बी. ए. के दो शब्दों पर अपना सबकुछ दांव पर लगाते थे आज के लड़के फगा शब्द पर अपनी आत्मा तक बेच देते हैं। फगा के लिए रिश्ते नाते, सुख सूविधा, अपना दायित्व सब कुछ ताख पर रख देते हैं। मेरा पुत्र फगा है। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया—फगा मतलब फ्लैट और गाड़ी। घर के अन्य सामान भी उन्होंने कर्ज पर ही ले रखा है। दिखावे के लिए उसने कई अनावश्यक सामान किस्त पर ले रखी है। पुरखों के महलनुमा घर/ सरकारी बंगलो में रहने के आदि मुझ जैसे को वह 1200-1400 वर्गफीट में क्या खाक खुश रखेगा? धन्ना सेट बनने के चक्कर में मेरे फगा पुत्र ने ऋण लिया। कंपनी डूब गयी किस्त आज भी भरे जा रहें हैं। उसके वेतन का तीन चौथाई तथा मेरे पेंशन का आधा भाग कर्ज चुकाने में चला जाता है। ऐसे जगह में शांति और सुकून की उम्मीद मैं कैसे करूं? आखिर बेटा है मेरा। इन छोटी छोटी बातों से उसे परेशानी होगी। मैं उसे अपनी परेशानी बताता ही नहीं। काल चक्र में आज की आनंदी अपनी कर्तव्य से विमुख हो गयी है। उन्हें टोकते हुए मैंने कहा—लेकिन अर्थ शास्त्र उन्नति के लिए ऋण की मान्यता तो देता है। संस्कृत के एक श्लोक को पढ़ते हुए कहा—शास्त्रों की बात से कुछ भी ऊपर नहीं हो सकता। शास्त्र सम्मत आचरण नहीं करने से दुष्परिणाम तो भोगने ही होंगे। हमारे धर्मशास्त्रों की जगह इन आधुनिक सिद्धान्तों का क्या औकात। पार्क के कर्मचारी की उद्घोषणा—सैर का समय ख़तम हो गया, कृपया पार्क खली कर दें की अनदेखी पर एक कर्मचारी आकर हमलोगों को समय का याद दिलाया। उसके आग्रह पर बिना ध्यान दिए मैंने बुजुर्ग महोदय से सवाल किया ---पुत्र तो आपका है, अच्छे संस्कार उसे देने की जिम्मेदारी तो आपकी थी, क्या आप अपने को दोषी नहीं मानते? मैंने देखा उनकी आँखें नम हो गयी, रुन्धाये गले से बोले—शायद कुछ कमी रह गयी। हो सकता है अपने खून के रिश्ते के साथ मेरे व्यवहार में कुछ बकाया रह गया जिसे मैं चूका रहा हूँ।

उससे यह मेरी आखरी मुलाकात थी। इसके बाद कोविड के कारण पार्क बंद हो गया। काफी अरसे के बाद पार्क के चबूतरे पर गया जहाँ सब कुछ सामान्य था। लोग योग कर रहे थे, बच्चे कब्डी खेल रहे थे। गौर किया तो देखा कि जगह जगह मार्कर से एम.एम. चबूतरा लिखा है। लेकिन बुजुर्ग महोदय नजर नहीं आये। अगल बगल प्रश्नवाचक नजरों से देखने लगा। कबड्डी वालों ने बताया एम.एम. सर नहीं रहे। कोविड के दूसरे लहर ने उन्हें चीरशांति दे दी है। शरीर में मानो जान ही नहीं हो। बूत बन कुछ पल खड़ा रहा, आँखें नम हो गयी। कुछ देर मैं उनके बैठने की जगह को निहारता रहा। ऐसा लगा जैसे कि वर्षों कि संचित सम्पति लुट गयी हो। भारी मन से वापस लौट आया। थोड़ी बहुत प्रयास से मैंने उनके बेटे के कार्यालय का पता कर लिया। उससे सहानुभूति के दो शब्द हेतु उसके पास पहुँचा। उसने मुझे बैठने का

इशारा करते हुए कहा। आपकी जो बातचीत मेरे पिताजी के साथ होती थी, वो प्रतिदिन मुझे सुनाया करते थे। मैं कुसंस्कारी, अभाग्य अपने पिता के प्यार को समेट नहीं पाया। आँखों से बहते आंसू को नियंत्रित करते हुए उन्होंने कहा आज पिताजी साथ नहीं हैं तो उनका महत्व समझ में आ रहा है। मैंने उसे दिलासा देते हुआ कहा-ऊपर वाले के आगे किसी की नहीं चलती। उनके सपने को आप पूरी करें। इससे उनकी आत्मा तृप्त होगी। फफकते हुए उन्होंने कहा-उनकी सेवा शुश्रूषा, सम्मान, उनकी इच्छा सब कुछ तो बकाया है मुझपर। इसे चुकाना ही है, यही मेरा प्रायश्चित्त होगा। ये पत्थर मुझे उनसे निकटता का अहसास तो कराता ही है। मुझे अच्छा करने के लिए प्रेरित भी करता है। उसके प्रति मेरे मन में जो आक्रोश था, उसके शब्दों और प्रायश्चित्त के शब्दों ने समाप्त कर दिया। बचपन से ही एक धारणा है कि जब हमसे हमारे परिजन बिछड़ कर ऊपर जाते हैं तो तारे बन कर हमारी गतिविधियाँ देखते हैं। ऊपर से अपने एम.एम. सर भी अपने बेटे के कामों को देखकर खुश होंगे, सुकुन भरा अहसास मन में हुआ।

मैं समस्त फगा बंधुओं से अनुरोध करना चाहता हूँ कि आप फगा बनें, अवश्य बनें लेकिन ऐसा कोई बकाया नहीं रखें। ऐसे बकाये तो आपको चुकाने ही होंगे, इहलोक में या परलोक में।





[भाई बहन को बुलाने गया लेकिन बहन मैके नहीं आई,
ननद भउजाई में वार्ता भउजाई ननद से कहती है !]
चाहे भईया राहथ चाहे जाथ हो सवनवाँ में,
न जाईव ननदी न जाईव ननदी हे न जाईव ननदी !
सवनवा में न जाईव ननदीसोने के गेरुया गंगाजल पानी,
चाहे भईया पैर धोबथ चाहे जाथ हो सवनवा न जईवय ननदी !
सोने के थाली में भोजना परोसली चाहे भाईया खाथ चाहे जाथ हो,
सवनवाँ में न जईवइय ननदी न जईवइय ननदी हे
न जईवईय नन्दी सवनवाँ मे न जईवईय ननदी !
चुनी चुनी कालियों के सेजिया लगौली चाहे भैया,
सोबथ चाहे जाथ हो सवनवाँ में न जईवइय ननदी !
कहे बनवारी कजरी बनाई गा के कार्यालय में जनता के समझाईब,
सवनवाँ में न जईवइय ननदी
जय सावन जय ननद भउजाई !





आनंद प्रकाश
वरीय लेखाकार



में कौन

बापू सचमुच प्रेम के पुतले
जादू था जिनकी वाणी में
चले अहिंसा के पथ पर वे
ली रुचि नहीं कुर्बानी में।

सत्याग्रह की खोज अनोखी
अपना जिसका रूप नया
बापू के मन में आया था
असहयोग का तत्व नया।

असहयोग, भारत छोड़ो
नारा देकर सजग किया
पूर्वाग्रह और छूआछूत से
बचने का संदेश दिया।

जीता इसको जो अजेय था
अत्याचारी शोषक था
एक छत्र सम्राट विश्व का
दमनचक्र का पोषक था।

किया देश स्वाधीन शीघ्र ही
पूरा हुआ सभी का सपना
भारत माँ की बेड़ी टूटी
हर मानव की पराधीनता छूटी।

हाय! वह दुर्दिन
जब नाथू ने गोली मारी
हे राम! कह गिरे धरा पे
रोयी पूरी मानवता सारी।

बापू ने क्या हमें दिया था
सादा जीवन उच्च विचार
रखेंगे उसको संजोग कर
होगा सबको सबसे प्यार।



छोड़ो जी गम की बात, जरा मुस्कुराइए।
ढल जाएगी ये रात, जरा मुस्कुराइए॥

इंसान को अता हुई, हैं मुस्कुराहटें।
पहनों ये जेवरात, जरा मुस्कुराइए॥

हँस के मिलो सभी से, ये दुनिया उदास है।
हँस देगी कायनात, जरा मुस्कुराइए॥

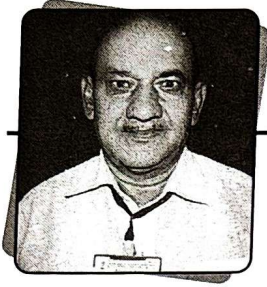
जीना हो जब मुहाल, न हो कोई रास्ता।
कम होगी मुश्किलात, जरा मुस्कुराइए॥

खुद को संभालिए यहाँ, हर मोड़ पे सितम।
बैठे लगाए घात, जरा मुस्कुराइए॥

रख हौसला तू खुद पे, भरोसा खुदा पे रख।
होगी गमों की मात, जरा मुस्कुराइए॥

कब तक गमों का बोझ, उठओगे तुम “मलक”।
छोटी सी है हयात, जरा मुस्कुराइए॥





बनवारी सिंह
केयर टेकर

सखी हे बिना रे बादल के बिजली कहवों चमके ला,
ई तो देशबा से सजल बरात चलल बा !
ई तो वाहों से चलके बम्बे शहर में आईल बा,
ई तो दिल्ली में आ के मरजाद ठहरल बा !
सखी हे बिना रे बादल के बिजली कहवों चमके ला,
सखी हे दिल्ली से पटना का उड़ान बनल बा !
ई तो पटना शहर में आके कमाल कईले बा,
ई तो पीएमसीएच एम्स में कोरोना के भरमार कईले बा !
पटना बांस घाट में कोरोना के जलावे ला लाईन लगल बा,
रोज हजारों - हजार कोरोना का मरीज मिलेला सखी हे !
माता पिता के कोरोना से मरने पर बेटा भिरे न ठेकेला,
शादि विवाह में 50 व्यक्ति मंजिल माटी में 20 आदमी से जादा न जायेला !
स्कूल कॉलेज बंद के कारण बच्चा बच्ची के भविष्य खराब हो गईल,
मंदिर महजीद में ताला लगल बा !
बाबा धाम शिव बाबा के देवघर में केबारी लगल बा,
रेल बस बंद होबेसे जात्री को बहुत परेशानी बनल बा !
हित नाता आना-जाना सब छुटल बा,
कोरोना में किसान कर्मचारी सब के घटा बा !
हाथ जोड़ के कहे बनवारी कोरोना भईया चलजा
अपना दुआरी हमरा देश के बचा लेहु जनबा !
भईया चलजा अपना मकनबा,
कोरोना जा जा जा जय भारत !





साथियों! हिन्दी भाषा में बहुत से मुहावरे ऐसे हैं, जो संख्या आधारित हैं। उदाहरण के लिए नौ दो ग्यारह होना, दो और दो पाँच होना इत्यादि। एक ऐसा ही मुहावरा का संबंध मुझसे जुड़ा है।

चौथी कक्षा में तृतीय स्थान से उत्तीर्ण होकर मैं वर्ष 1994 में पाँचवी कक्षा में नामांकित हुआ। उसी समय जनवरी माह में मेरी नजर किसी से दो और दो चार हो गयी। परंतु हम दोनों एक ही विद्यालय में नहीं थे। उसका परिवार मेरे ही मोहल्ले में किरायेदार था। तब मैं यही जानता था कि फिल्म में एक हीरो और एक हीरोइन होते हैं। वे मिलते हैं, गाना गाते हैं, नाचते हैं, इत्यादि।

एक बार उसके घर के सामने ठेले पर चाट और गोलगप्पा बिक रहा था। मैं वहाँ चाट खाने चला गया। तब वो भी चाट खाने आई। और इस तरह हमारी पहली मुलाकात हुई। परंतु यह सिलसिला तीन महीने ही रहा। उसके पिताजी का स्थानांतरण अन्यत्र हो जाने के कारण पूरा परिवार होली के बाद चला गया। और मैं हो गया अकेला। कुछ दिन अकेले ही गुजारा।

फिर जून माह में अर्द्धवार्षिक परीक्षा शुरू हुई। हिन्दी विषय में एक प्रश्न संज्ञा की परिभाषा उदाहरण सहित लिखने से संबन्धित था। साथ ही, प्रश्न पत्र पर निर्देश लिखा हुआ था कि अपने शब्दों में उत्तर दे। फिर क्या था, मैंने भी लिख डाला:-

“किसी व्यक्ति, वस्तु एवं स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। उदाहरण के लिए मैं जिससे प्यार करता हूँ उसका नाम रानी है। इसलिए रानी को संज्ञा कहते हैं।”

जैसा कि होता है- परीक्षा का परिणाम आया। मुझे तीसरे स्थान के बजाय तेरहवां स्थान मिला। उसके बाद पेरेन्ट्स मीटिंग से लौटकर जब पिताजी घर आए तो प्यार से मुझे बुलाया और तेरह चप्पल का पुरस्कार दिया।

इस प्रकार तब से मेरा संबंध एक हिन्दी मुहावरा से जुड़ गया।

“अपने शब्दों में लिखे” मतलब “तीन तेरह होना”

अथवा

“तीन तेरह होना” मतलब “अपने शब्दों में लिखे”।





चंदन कुमार
लेखकार

दोस्ती

दोस्ती का ये अफसाना हो गया,
कि तुम संग बैठे ज़माना हो गया।
अब मुलाकातें नहीं होती ऐ दोस्त,
कि रोज़ी रोटी कमाना हो गया।
कभी स्कूल जाते थे साथ साथ,
उस गली से गुजरे ज़माना हो गया।
जहाँ शामें गुज़र जाती थी बेफ़िक्र,
उन मैदानों पे जाना बहाना हो गया।
चोरी छुपे कहीं सजती थी महफ़िलें,
अब घर में ही ठिकाना हो गया।
कभी वक्त बिताते वक्त नहीं बीता,
अब वक्त देख मिलना मिलाना हो गया।
ठीक हो जाते थे मिट्टियों से ज़ख्म,
उसी के लिए दवा खाना हो गया।
हंसा करते थे बचकानी हरकतों पर,
वही हरकतें अब बचकाना हो गया।
सच्चाई झलकती थी हमारी दोस्ती में,
वो दोस्ती बस एक फ़साना हो गया।





पूर्णन्दु कुमार झा
द्वारा-अविनाश कुमार ठाकुर
सं०ले०अ०

सड़क सुरक्षा

लापरवाही अगर हुई तो
खतरे में इंसान!
खा ठेकर कितने ही राही
होते हैं बेजान!!
अनुपालित हो मान्य सुरक्षा
गर ऐसा हो भान!
जान सुरक्षा करना संभव
मत होना अनजान!!

चलना राही सम्यक् पथ से
होय उचित पहचान!
सत् पथ से ही आगे बढ़ना
कुपथ विनाशक जान!!
अनहोनी ना होय स्वयं से
रखना राही ध्यान!
जान सुरक्षा करना संभव
मत होना अनजान!!

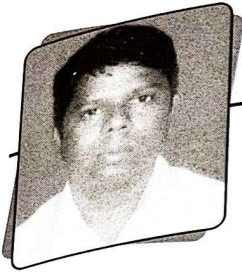
देख सड़क की उचित व्यवस्था
होय सुरक्षाज्ञान!
गति निर्धारित वाहनपथ में
चाल वही रख ध्यान!!
चूक कभी ना होय नियम से
नियम महावरदान!
जान सुरक्षा करना संभव
मत होना अनजान!!

पगडंडी से पैदल चलना
बाँया से प्रस्थान!
पार जरूरी जब उस पथ से
जेब्रा ही आसान!!
पारपथों से जान सुरक्षित
लक्ष्यचूक व्यवधान!
जान सुरक्षा करना संभव
मत होना अनजान!!

त्रुटिवश में जब होय व्यवस्था
खतरा में ही जान!
सुधि-बुधि को मत खोने देना
जब जारी अभियान!!
आगे-पीछे देख सड़क को
करना पार सुजान!
जान सुरक्षा करना संभव
मत होना अनजान!!

जाना गर पथपार जरूरी
टकराए ना जान!
ठेकर ना लग जाय किसी को
होय नहीं नादान!!
फेंक नहीं कुछ देना पथ में
सड़क सुरक्षा ध्यान!
जान सुरक्षा करना संभव
मत होना अनजान!!





कि नज़रों में जब से वो आने लगे हैं।
नज़ारें भी हमको सुहाने लगे हैं॥

सदी था मैं जिनके लिए यार कल तक।
वो लम्हों में हमको बिताने लगे हैं॥

कभी ढूँढ़ते थे बहाने हँसी के।
बहाने से हमको रुलाने लगे हैं॥

रही जिन्दगी मेरी जिनके हवाले
वो एहसान मुझपे जताने लगे हैं॥

हमी ने किया जिन चरागों को रोशन
वही आग घर में लगाने लगे हैं॥

लकीरों में थीं जिनके तकदीर अपनी।
लकीरों से ही मात खाने लगे हैं॥

पिरो कर गजल में हम दर्द अपना
भरी बज़्म में गुनगुनाने लगे हैं॥

उसी बात पे प्यार आता था कल तक।
उसी बात पे मुँह फुलाने लगे हैं॥

मिली है मुहब्बत में तन्हाई मुझको।
“मलक” कम से कम हम ठिकाने लगे हैं॥

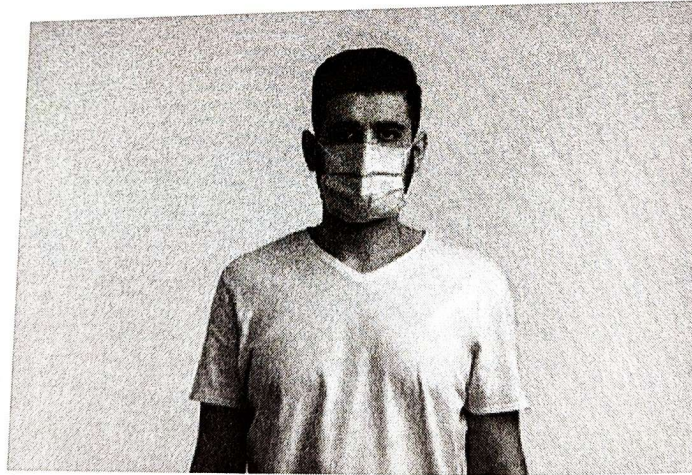




पल्लवी राज
पुत्री-श्री सत्येन्द्र यादवी
लेखिका

कोरोना को हराना है।

मिलकर कोरोना को हराना है।
मिलकर कोरोना को हराना है।
घर से हमें कहीं नहीं जाना है।
हाथ किसी से नहीं मिलाना है।
चेहरे पे हाथ नहीं लगाना है।
मिलकर कोरोना को हराना है।
बार-बार अच्छे से हाथ धोते जाना है।
सेनेटाइज करके देश को स्वच्छ बनाना है।
बचाव ही इलाज है यह समझाना है।
मिलकर कोरोना को हराना है।
कोरोना से हमको नहीं घबराना है।
सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना है।
देशहित में सभी को यह कदम उठाना है।
मिलकर कोरोना को हराना है।
मिलकर कोरोना को हराना है।





हिन्दी दिवस २०२० के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय, वरीय उप महालेखाकार महोदय एवं अधिकारीगण हिन्दी पत्रिका चेतना का विमोचन करते हुए।



हिन्दी दिवस २०२० के अवसर पर वरीय उप महालेखाकार महोदय, स्व० अंजनी कुमार भूतपूर्व सहायक लेखा अधिकारी को पुरस्कार प्रदान करते हुए।



हिन्दी पखवाड़ा समारोह २०२१ के शुभारंभ के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय दीप प्रज्वलित करते हुए।



हिन्दी पखवाड़ा समारोह २०२१ के शुभारंभ के अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय।



हिन्दी पखवाड़ा समारोह २०२१ के शुभारंभ के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय।
अपने भावोद्गार व्यक्त करते हुए।



हिन्दी पखवाड़ा समारोह २०२१ के शुभारंभ के अवसर पर वरीय उप महालेखाकार महोदय
अपने भावोद्गार व्यक्त करते हुए।



स्वतंत्रता दिवस २०२१ के अवसर पर वरीय उप महालेखाकार महोदय, श्री भुवनेश्वर हेमब्रम एम०टी०एस० को उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कार प्रदान करते हुए।



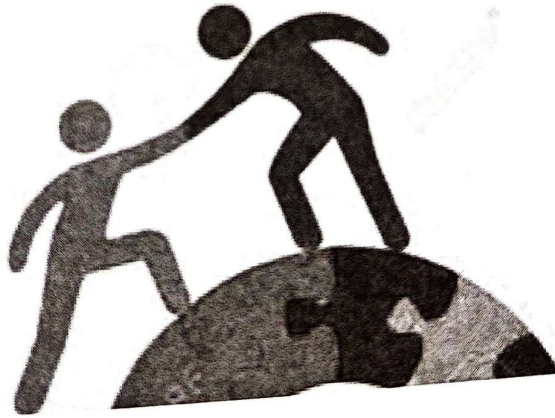
स्वतंत्रता दिवस २०२१ के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय, वरीय उप महालेखाकार महोदय एवं उप महालेखाकार महोदय गण।



लक्की कुमार माँझी
पुत्र- श्री सत्येन्द्र माँझी
लेखाकार

साथी हाथ बढ़ाना

एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना
साथी हाथ बढ़ाना ।
हम मेहनतवालों ने जब भी मिलकर कदम बढ़ाया
सागर ने रास्ता छोड़ा, पर्वत ने शीश झुकाया
फौलादी हैं सीने अपने फौलादी हैं बाँहें
हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दे राहें
साथी हाथ बढ़ाना ।
मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना
कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना
अपना दुख भी एक है साथी, अपना दुख भी एक
अपनी मंजिल सच की मंजिल अपना रास्ता नेक
साथी हाथ बढ़ाना ।





रुद्र प्रताप सिंह
पुत्र-श्री शंकर लाल सिंह
स०ले०अ०(तदर्थ)

मैली झोंपड़ियों के हैं ये
मैले-मैले बच्चे,
उछल-कूदते, खिल-खिल हँसते
हैं ये कितने अच्छे।

नहीं हमारे साथ कभी ये
जाते हैं स्कूल,
क्यों इनके कपड़ों पर मम्मी
इतनी ज्यादा धूल ?

इनके बस्ते और किताबें,
मम्मी, किसने छीने,
वरना ये भी खुब चमकते
जैसे नए नगीने।

ये भी भारत के बच्चे हैं
ये भारत की शान हैं,
झोंपड़ियों के हैं तो क्या हैं,
मन इन पर कुरबान है।

मुझ जैसी इनकी दो आँखें
मुझ जैसे दो हाथ,
नहीं पढ़ा करते पर क्यों ये
कभी हमारे साथ ?

झाबों में बरतन मलते
या बोझा ढोते हैं,
हम स्कूल में होते हैं तब
ये चुप-चुप रोते हैं।

मम्मी, सोच लिया है पढ़कर
इनको खूब पढ़ाऊँगा
ये पढ़कर आगे बढ़ जाएँ
इनको यही सिखाऊँगा।





रुद्र प्रताप सिंह
पुत्र-श्री शंकर लाल सिंह,
स०ले०अ०(तदर्थ)

प्रकृति का उपहार

बिना कहे सूरज देता है
हमको धूप सुनहरी
बिना कहे चाँदनी चाँद है
देता हमें रूपहली।

बिना कहे ही हवा हमें
देती है हवा निरंतर,
बिना कहे देते बादल भी
पानी बरस-बरसकर।

बिना कहे ही देते हमको
पेड़ फूल-फल छाया,
बिना कहे ही देती धरती
अपनी सारी माया।

इसीलिए रवि-शशि धरती की
पेड़ पवन मेघों की
पूजा और वंदना हेतू
आई ज्यों देवों की।

अनमांग जो माँग दूसरों
की पूरी करते हैं,
उनके यश के गीत सुहाने
सदा चला करते हैं।





पंडित गुलाबचन्द्र बहुत ही धनी व्यक्ति थे। उनकी कई दुकाने थीं। जो भी व्यक्ति चोरी का माल उनके दुकान पर बेचने आता था पंडित जी कौड़ी के भाव में माल को खरीदकर काफी मुनाफा लेकर उसी माल को दूसरे दुकानदार के पास बेचा करते थे। पंडित जी को एक पुत्र, नाम अमर एवं एक पुत्री नाम नायरा था। पंडित जी अपने लाडले पुत्र की शादी बहुत ही कम उम्र में शारदा नाम की लड़की से कर दिये थे। शारदा भी माता-पिता की एक मात्र पुत्री थी। शारदा के पिता जी बचपन में ही गुजर गये थे। वे अपने पीछे काफी संपत्ति छोड़ गये। शारदा एवं उसकी माता विलासी की जिंदगी जीते थे। पंडित जी तो थे काफी धनी व्यक्ति परन्तु अपने पैसे को काफी सोच समझ कर खर्च किया करते थे। यहाँ तक कि अमर की पढ़ाई का फीस भी समय पर जमा नहीं करते थे। एक बार की बात है, विद्यालय के शिक्षक ने घोषणा की कि जो बच्चे समय पर फीस जमा नहीं करेंगे उन्हें वर्ग से निकाल दिया जायेगा। साथ ही वार्षिक परीक्षा में भी बैठने नहीं दिया जायेगा। अमर को विद्यालय में फीस जमा करने के लिए पिताजी से पैसा नहीं मिला। विद्यालय में जब विद्यार्थी का नाम पुकारा जा रहा था, फीस जमा करने के लिए, उस समय अमर क्लास से बाहर घूम रहा था क्योंकि फीस जमा करने के लिए उसके पास पैसा नहीं था। अमर का एक दोस्त था सलीम। उसने अमर का फीस जमा कर एडमीट कार्ड ले लिया। अमर का खोज बिन करने लगा तो पता चला कि वह बाहर घूम रहा है। वह अमर के पास गया और बोला, चलो तुम्हारा फीस मैंने जमा कर दी है और ये अपना प्रवेश पत्र लो। कल से समय पर परीक्षा में उपस्थित हो जाना। अमर पढ़ने में काफी तेज था। बोर्ड परीक्षा में पूरे राज्य स्तर पर टॉप कर गया। सभी दोस्तों ने उसे बाधाई दी। परन्तु उसके पिता जी को कोई फर्क नहीं पड़ा। पंडित जी चाहते थे कि बेटा मेरे काम-काज में हाथ बटाये। परन्तु अमर अपने पिता के काम-काज से खुश नहीं रहता था। वह समाज सेवा कर खुश रहना चाहता था। धीरे-धीरे अमर ने स्नातक की पढ़ाई पूरी की। और समाज सेवा में जुट गया। अमर की पत्नी शारदा समझाती थी कि वह पिताजी के काम काज में सहयोग करे। परन्तु अमर को यह पसन्द नहीं था कि वह चोरी के माल कौड़ी के भाव में खरीदे और उसे मुनाफा लेकर बेचे। इसी बात को लेकर पिता-पुत्र के बीच मन मुटाव हो जाता था। एक दिन पत्नी के काफी समझाने पर वह पिताजी के दुकान पर बैठा। उसके पिता जी किसी काम से बाहर गये हुए थे। एक बहुत ही गरीब बुढ़िया उसके दुकान पर आयी। अमर ने पूछा क्या काम है? बुढ़िया बोली पंडित जी से काम है। अमर समझ गया। उसने बोला-पंडित जी तुम्हें जो पैसा देते थे, वह मैं दे देता हूँ। बुढ़िया लेने से मना कर रही थी। परन्तु अमर ने जिद करके 500 रु० दे दिया। पैसा लेकर बुढ़िया जा रही थी। अमर को उस पर बहुत दया आ गयी और उसने

दूर से ही माता जी कह कर पुकारा तो वह उसे अपने तरफ आते हुए देखी। पठानीन ने कहा कि बेटा मेरे पीछे क्यों आया। मैं घर चली जाती। तब अमर ने कहा नहीं माता जी मैं अपनी एक गाड़ी से आपको घर छोड़ देता हूँ। अमर घर छोड़ा तो देखा कि घर की स्थिति बहुत ही दयनीय है। पठानीन को एक जवान पोती थी, जिसका नाम रजिया था। रजिया थी तो सांवली परन्तु युवा होने के कारण किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर सकती थी। रजिया रुमाल बना कर और उसे बेचकर कुछ पैसा कमा लेती थी। बाकी पैसे पंडित जी के यहाँ से 5/- प्रतिमाह मिल जाता था, जिससे उसका घर किसी तरह से चलता था। रजिया के बहाने अमर पठानीन के घर जाने लगा। दोने बुढ़िया के पीछे एक दुसरे से मिलने लगे। बातचीत होने लगी। अमर अपनी पत्नी की विलासी जीवन को पसंद नहीं करता था। धीरे-धीरे रजिया के प्रति उसे आकर्षण होने लगा। रजिया को इस बात का पता नहीं था कि अमर उसके प्रति आकर्षित हो रहा है। एक दिन पठानीन पंडित जी के दुकान पर जाकर खबर दी कि वह रजिया की निकाह तय कर दी है। संयोग से उस दिन दुकान पर अमर बैठा हुआ था। अमर यह समाचार सुनकर मन ही मन आग बबूला हो गया। पठानीन निकाह के लिए सारा खर्च पंडित जी से देने का अनुरोध करने हेतु अमर से कही तब अमर ने कहा कि तुम खर्च के बारे में खुद पंडित जी से बात कर लेना। अमर बात काट कर कहा कि इतनी जल्दी रजिया की शादी करने की क्या जरूरत थी। अमर जब देखा कि पठानीन घर में बात चीत करने में मशगुल है तब वह चुपके से रजिया के पास चला गया और रजिया से कहा कि तुम इतनी जल्दी निकाह के लिए क्यों तैयार हो गयी। रजिया बोली कि अम्मा तय की है। आप क्या चाहते हैं कि मैं निकाह नहीं करूँ तो मैं नहीं करूँगी। परन्तु आप हिन्दू हैं और मैं मुस्लिम, ये कैसे संभव होगा। अमर बोला तुम इस निकाह से इन्कार कर दो, मैं तुम से शादी करूँगा। दोनो अपने बातों में व्यस्त ही थे कि पठानीन एकाएक सामने आकर सारी बात सुन ली और अमर को बहुत भला बुरा कहने लगी। रजिया को भी कमरे में बंद कर दी। साथ ही रजिया को हिदायत दी की तुम कभी भी अमर से नहीं मिलोगी। अमर को डर हो गया कि पठानीन सारी बातें उनके पिता पंडित जी से कह देगी। यह सोच कर वह अपने दोस्त सलीम के पास चला गया। सलीम से सारी बातें बतायी। यहाँ तक की अमर रजिया से निकाह करने के लिए इस्लाम धर्म को भी कबुल करने के लिए तैयार हो गया। परन्तु उसे डर सता रहा था कि समाज इस निकाह की मंजूरी नहीं देगा। दोनों दोस्तों के बीच बातचीत चल ही रही थी कि पंडित जी एका एक उन दोनों के बीच पहुँच गये। पंडित जी काफी समझाये की पठानीन मुहल्ले वाले को लेकर घर पर गोर शराबा किया है। इस लिए तुम इस प्यार को भूल जाओ, परन्तु अमर तैयार नहीं हुआ। अमर के इस रवैये से शारदा काफी दुखी हुई। समय बदलता गया। इधर सलीम और रजिया के बीच चोरी छुपे पत्राचार होने लगा। परन्तु रजिया अमर को दिल से निकाल नहीं पा रही थी। शारदा के रवैये में बदलाव हुआ और अमर धीरे-धीरे शारदा के करीब आने लगा। अमर को

अब अपनी गलती पर पछतावा होने लगा। एक दिन सलीम जब अमर से पूछा कि यदि रजिया का निकाह मुझसे हो जाए तो तुम्हें तकलीफ नहीं होगी। अमर कहा नहीं रजिया की मैं पूछता हूँ। सलीम एक दिन रजिया से निकाह कर लिया। अमर और रजिया का प्यार पाक रह गया।





राज एक अनाथ लड़का था। उसकी माता पिता की मृत्यु बचपन में ही हो गई थी। मि० मल्होत्रा शहर के एक रईस व्यक्ति थे। उनको एक लड़का था जिसका नाम मोहन एवं एक लड़की थी जिसका नाम राधा था। मि० मल्होत्रा एक दिन शहर से बाहर धूमने जा रहे थे कि रास्ते में राज पर नजर पड़ गयी। राज की मासूमियत एवं बेसहारा देखकर वह अपने घर ले आये। मि० मल्होत्रा राज को अपने बेटा की तरह प्यार करने लगे। उसका दाखिला भी शहर के अच्छे स्कूल में करा दिया जहाँ उनका बेटा मोहन एवं बेटी राधा पढ़ती थी। राज बचपन से ही पढ़ने में बहुत तेज था। राधा धीरे-धीरे राज को पसंद करने लगी। परन्तु राज कुछ नहीं समझता था। वह सिर्फ अपने पढ़ाई पर ही ध्यान देता था। वह डॉक्टर बनना चाहता था। राज को डॉक्टर की पढ़ाई करने के लिए मि० मल्होत्रा विदेश भेज दिए। मोहन वकील बनना चाहता था। मोहन को वकालत की पढ़ाई पूरी करने के लिए मि० मल्होत्रा ने इंग्लैंड भेज दिया। मि० मल्होत्रा की पत्नी श्रीमती शांति देवी दोनों बच्चों से बहुत प्यार करती थी। बेटी से उन्हें ज्यादा लगाव था। माँ बेटी की हर इच्छा को पूरी करती थी। बच्चों ने पढ़ाई पूरी कर ली। पढ़ाई पूरा होते ही राज ने घर में तार भिजवाया कि मैं घर लौटना चाहता हूँ। मि० मल्होत्रा साहब ने भी उसे घर वापस आने के लिए कह दिया। राज के घर आने के दिन राधा एवं मोहन दोनों स्टेशन गये। राज को स्टेशन पर पहुँचते ही राधा खुश हो गयी। वह बचपन से ही राज को चाहती थी। राज अब और भी ज्यादा खुबसूरत लगने लगा था। राधा मन ही मन राज से प्यार करने लगी और शादी करने का दिल में ख्याल रखने लगी। राज ने शहर के ही बहुत बड़े हॉस्पिटल में डाक्टर की नौकरी ज्वाइन कर लिया था। राज का ज्यादा समय हॉस्पिटल में ही बीतता था। राधा राज को बीच-बीच में फोन कर के बात कर लिया करती थी। राधा अब राज का ज्यादा ख्याल रखती थी। परन्तु राज को राधा में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह मल्होत्रा साहब की हर बात मानता था। जिस हॉस्पिटल में राज डॉक्टर था उसी हॉस्पिटल में सारा नाम की एक बहुत ही सुंदर नर्स काम करती थी। सारा बहुत ही मेहनती थी। अस्पताल के सभी रोगियों का बहुत ही ख्याल रखती थी। सभी रोगियों को समय पर नाश्ता करवा कर दवा खिलाती थी। श्री बाबू बहुत ही बीमार व्यक्ति थे। उस भी बहुत ज्यादा हो चुकी थी। सारा श्री बाबू का बहुत ख्याल रखती थी। श्री बाबू भी सारा को अपनी बेटी की तरह प्यार करते थे। सारा की देख-रेख में श्री बाबू धीरे-धीरे ठीक होने लगी। इधर राज के इलाज से गंभीर रूप से बीमार व्यक्ति भी धीरे-धीरे ठीक होने लगे। राज का नाम अच्छे डाक्टर में होने लगी। राज सारा की मेहनत देख कर धीरे-धीरे उसके करीब आने लगा। एक दिन घर जाने के समय बारिश होने लगी। राज ज्यादा होने के कारण राज सारा को अपने गाड़ी में बैठा कर उसे उसके घर छोड़ दिया। राज सारा से पूछा कि घर में और कौन-कौन है? सारा बोली कि मेरे-माता पिता की मृत्यु बचपन

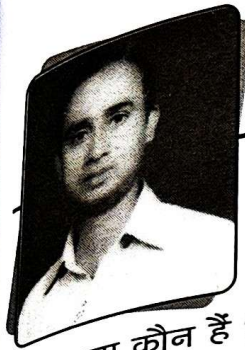
में ही हो गयी थी। मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है। सारा का दुख सुनकर राज को बहुत दया आ गयी। राज मन ही मन सारा से शादी करने के बारे में सोचने लगा। वह सोचने लगा कि सारा से अच्छी लड़की उसके लिए कोई और हो ही नहीं सकती है। एक दिन राज ने सारा के सामने शादी का प्रस्ताव रख दिया। सारा शादी का प्रस्ताव सुनकर शरमा गयी और इशारे में ही हाँ कह दी। राज सारा की हाँ सुनकर बहुत खुश हुआ। दोनों एक दूसरे के साथ ज्यादा से ज्यादा वक्त बिताने लगे। अब राज जल्द से जल्द सारा से शादी करना चाहता था। पंडित जी से पूछ कर शादी का दिन तय कर लिया। इधर राज के घर में सभी लोग राज की शादी राधा से करना चाहते थे। राज जब घर पहुँचा तो सभी उसे देखकर खुश हो गये। मल्होत्रा साहब के घर में शादी की तैयारी हो ही रही थी। मल्होत्रा साहब ने राज से कहा कि मैं तुम्हें एक सरप्राइज देना चाहता हूँ। राज ने भी कहा कि अंकल मैं भी आपको एक सरप्राइज देना चाहता हूँ जिसे सुनकर आप खुश हो जायेंगे। घर के हॉल में सभी व्यक्ति पहले से मौजूद थे। मल्होत्रा साहब ने कहा कि ठीक है पहले तुम्हीं अपना सरप्राइज सुनाओ। राज ने कहा कि “मैं हॉस्पिटल में काम करने वाली नर्स सारा से बहुत प्यार करता हूँ और उसी से शादी करना चाहता हूँ।” राज की इस बात को सुनकर घर के सभी सदस्य के होश उड़ गये। राधा रुठ कर अपने कमरे में चली गयी। मल्होत्रा साहब को तो मानो साप सूँघ गया। कुछ बोल ही नहीं रहे थे। श्रीमती शांति देवी बड़बड़ाते हुए हॉल से चली गयी। कुछ देर के बाद मल्होत्रा साहब ने राज को कहा कि बेटा तुम सारा से शादी कर लो। मैं पिता का फर्ज निभाऊँगा। राधा कुछ देर के बाद नीचे आयी और राज को खूब खरी-खोटी सुनायी। मैं तुमसे बचपन से ही शादी करना चाहती थी और तुमने किसी और को पसंद कर लिया और शादी का दिन भी तय कर लिया। राज बोला कि मुझे इस बात की कभी भनक भी नहीं लगी, मैंने इस बारे में कभी सोचा भी नहीं था। फिर भी यदि सारा को वचन न दिया होता तो इस घर के फैसले को मैं हँसी खुशी मान लेता और मुझ पर जो कर्ज था मैं उसे उतार देता। इतना कुछ होने के बाद राज हॉस्पिटल चला गया। तय दिन को ही राज और सारा ने शादी कर ली। पंडित जी ने दोनों की शादी करा दी। बीमारी की बहाना बना कर मल्होत्रा साहब शादी में शामिल नहीं हुए। राज और सारा पति-पत्नी की तरह रहने लगे। दोनों साथ में अस्पताल जाते अपना काम निपटाते और शाम में घर लौट जाते। राज सारा को बहुत प्यार करता था। सारा की सभी बात को मानता था। अब राज काम से ज्यादा सारा के साथ समय बिताना चाहता था। अस्पताल से छुट्टी लेकर बाहर घूमने जाते थे। राज की धीरे-धीरे काम में दिलचस्पी कम होने लगी वह पत्नी के पास ज्यादा समय बिताने लगा। राज की इस हरकत को देखकर हॉस्पिटल के अन्य वरीय डॉक्टर परेशान होने लगे। वरीय डॉक्टर चाहते थे कि राज गंभीर बीमारी पर रीसर्च करे। एक दिन वरीय डॉक्टर राज के अनुपस्थिति में उसके घर गये और सारा को समझाया कि क्या आप नहीं चाहती हैं कि आपका पति एक काबिल डॉक्टर बने। शहर का नामी डॉक्टर हो। उसके काम में आप उसकी मदद किजिए और उसे रिसर्च में सहयोग कीजिए। वरीय डॉक्टर साहब की बात

सारा को बहुत अच्छी लगी। राज जब घर लौटा तो सारा ने उसे समझाया। राज रिसर्च में जुट गया सारा नर्स थी ही राज को काम में सहयोग करने लगी। सारा को लगने लगा कि मेरे रहते राज अपने काम में सफल नहीं हो सकता है। यदि मैं नहीं रहूँ तो वह ज्यादा से ज्यादा समय अपने काम पर देगा। इस बात को सोचकर सारा घर को छोड़कर चली जाती है। भटकते-भटकते वह एक दिन श्री बाबू के घर पहुँच जाती हैं। श्री बाबू देखते ही सारा को पहचान लेते हैं और अपने घर में रहने की इजाजत दे देते हैं। सारा श्री बाबू के घर में बाप-बेटी की तरह रहने लगती है। इधर सारा के घर छोड़ने से राज उदास हो जाता है और अपना काम छोड़ देता है। एक दिन वह मल्होत्रा साहब के घर जाता है वहाँ उसे पता चला कि राधा अभी तक उसका ख्याल दिल से नहीं निकाली है और उसी से शादी करने का जिद्द कर बैठी है। राधा की माँ बहुत राज को समझाती है मल्होत्रा साहब की बीमारी का हवाला देते हुए शादी के लिए दबाब डालती है और कहती है कि तुम यदि राधा से शादी कर लेते हो तब निश्चित ही मल्होत्रा साहब स्वस्थ हो जायेंगे। राज बिल्कुल भी शादी के लिए तैयार नहीं होता है परन्तु मल्होत्रा साहब को स्वस्थ रखने के लिए हामी भर देता है। राज राधा से वचन लेता है कि वास्तविक जीवन में हम दोनों पति-पत्नी के रूप में नहीं रहेंगे। परन्तु इस बात की जानकारी घर के अन्य सदस्य को नहीं होनी चाहिए। मैं आज भी सारा से उतना ही प्यार करता हूँ जितना कि पहले और मैं इस जन्म में उसे भूल नहीं सकता हूँ मेरी आत्मा में सिर्फ सारा ही बसी हुई है। राधा राज की सभी शर्त को मान लेती है।

राज और राधा की शादी हो जाती है। मल्होत्रा साहब बेटी को खुश देखकर वह भी खुश हो जाते हैं और दोनों को आशीर्वाद दे देते हैं। घर के बाहर सभी लोगों के सामने दोनों दिखाते हैं कि पति-पत्नी है। परन्तु वास्तविक जीवन में दोनों पति-पत्नी की तरह नहीं रहते हैं बल्कि एक दोस्त की तरह रहते हैं। राधा जब भी राज के करीब जाना चाहती है राज उसे अपना शर्त याद दिला देता है। अब राधा राज को समझाती है कि तुम अपना रिसर्च का काम पूरा कर लो। मैं तुम्हें सहयोग करूँगी। परन्तु राधा को दवा की विशेष जानकारी नहीं रहती है। राज काम कर ही रहा था कि राधा के हाथ से एक दवा नीचे गिर जाती है और राज के आँख में कुछ बूँदें चली जाती हैं जिसके कारण राज अंधा हो जाता है। राज को कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता है। राज अंधा ही रहना चाहता है क्योंकि बंद आँख से सारा को देख तो सकता है मन ही मन उससे बात तो कर सकता है। सारा का ख्याल राज मन से नहीं निकाल पाता है। सारा भटकते-भटकते राधा के घर पहुँच जाती हैं राधा को नर्स की आवश्यकता थी ही राज को देख भाल करने के लिए। राधा सारा को लेकर राज के पास ले जाती है और सेवा करने के लिए रख लेती है। सारा जब राज को देखती है तो वह पहचान जाती है और नाम बदल कर रहने के लिए तैयार हो जाती है। राधा नाम पूछती है तो सारा अपना नाम राशि बताती है। राशि नाम से राधा के घर में रह कर राज की सेवा करने लगती है। राशि राज को घुमाने कभी गार्डन कभी नदी के किनारे ले जाती है। राज एक दिन राशि से कहता है कि मेरी सारा की

आवाज तुम्हारी जैसी ही थी परन्तु वह मुझे छोड़कर कहीं चली गयी। मैंने बहुत खोजा पर वह नहीं मिली। तुम सारा तो नहीं हो। वह कहती है कि मैं राशि हूँ। मैं आपकी सेवा करने के लिए आयी हूँ। आप ठीक हो जाइएगा। राज कहता है कि मैं अंधा ही ठीक हूँ। सारा के सिवा किसी और को तो नहीं देख सकता हूँ न। इतना सुनने के बाद राशि कहती है कि जब आप सारा से इतना ही प्यार करते हैं तो राधा से शादी क्यों किए। राज अपना सारी बात राशि को बता देता है। राशि को अपनी गलती का ख्याल आता है और राज को ठीक करने की कसम खाती है। राज को आपरेशन करवाने के लिए तैयार करती है। वह राज की बहुत ही सेवा करती है। राज की तबीयत में धीरे-धीरे सुधार होने लगता है। राशि का विचार राज को धीरे-धीरे अच्छा लगने लगता है। राधा से तो वह कभी प्यार करता ही नहीं था। ऑपरेशन के दिन राशि जब राज से पूछती है कि जब तुम ठीक हो जाओगे यानि तुम्हारी आँख की रोशनी जब वापस आ जायेगी तब तुम पहले किसे देखना चाहोगे। राज कहता है कि मैं उस नर्स को शुकिया अदा करना चाहूँगा जो मेरी आँखों की रोशनी को वापस लायी है। राज की आँखों का ऑपरेशन सफल हो जाता है। आँखों से पट्टी खोलने की बारी आती है तो राधा का भाई मोहन पूछता है कि तुम पहले किसे देखोगे। राज कहता है कि उस नर्स को जिसने मेरी दिन रात सेवा की। राज की आँख की पट्टी खोल दी जाती है। राशि एक किनारे से छिप कर राज को देखती है। राज पट्टी को हटते ही धीरे-धीरे आँख को खोलता है और कहता है कि उसे सब कुछ अब दिखाई पड़ने लगा है। परन्तु वह नर्स कहाँ है जिसने मेरी इतनी सेवा की। राशि राज को देखती है कि उसे दिखाई पड़ने लगा है उस जगह से चली जाती है। राशि को लगता है कि मेरे वजह से राधा और राज के रिश्ते में कोई कड़वाहट न हो यही सोचकर वह चली जाती है। राज और मोहन राशि को खोजने जाते हैं और राशि मिल जाती है। राशि को देखते ही राज पहचान जाता है और कहता है कि यह तो मेरी सारा है। राज और मोहन सारा को वापस घर लाते हैं। राधा सारा को कहती है कि तुम ही राज के लिए सही जीवन साथी हो। राज तुम्हें कभी अपने दिल से नहीं निकाला था। मैं तो पागल थी जो राज को पाना चाहती थी। मेरा प्यार एक तरफा था। राधा को अपनी गलती का अहसास हो जाता है और वह राज एवं सभी सदस्य से माफी मांग कर विदेश चली जाती है। राज और सारा दोनों साथ रहने लगते हैं। और साबित करते हैं कि यही सच्चा जीवन साथी है।





उत्तम कुमार
वरीय लेखाकार

हमारा कर्तव्य

हम कौन हैं ? क्यों हैं ? इस संसार में प्राणी जन्म लेने के बाद लोगों की भीड़ में अपना उद्देश्य भूल जाता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम सभी परम सनातन धर्म का एक भाग हैं, जिसका अतीत पुरातन काल या यों कहें युगों-युगों से सुनहरा एवं गौरवमयी रहा है। हमें अपने कर्तव्य बोध का ज्ञान कहीं से सीखने की आवश्यकता नहीं है। यह ज्ञान प्राणी के जन्म से ही उसके भीतर विद्यमान होता है। जिसे वह अपने मन को बिना आत्मसात किए जान नहीं पाता है। उसे लगता है कि जीवन केवल खाने-पीने, सोने और मौज-मस्ती के लिए है, किन्तु सच्चाई यह है कि जब हम पृथ्वी पर जन्म लेते हैं तो अपने माता-पिता के साथ-साथ इस पृथ्वी का भी हम ऋणी हो जाते हैं, विशेषकर उस राष्ट्र का जहाँ हमने जन्म लिया है और इस प्रकृति का जिसने हमें संजोया है, हमारे लालन-पालन में अपना योगदान दिया है। हमारा कर्तव्य है कि हम बड़े होकर इन सभी का ध्यान रखें, उन्हें पूरा सम्मान दें। अपने ईश्वर की आराधना करें। संसारिक जीवन में उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण करें। तभी हम उनका ऋण चुका सकते हैं।

यह सारी बातें हमारे शास्त्रों में भी उल्लेखित हैं, जिसमें हमारी संस्कृति का सार है, जीवन दर्शन है, जिसके अनुसार सारा संसार हमारा परिवार है। विगत कुछ सौ वर्षों में भले ही सनातन धर्म से अन्य कई पंथ की स्थापना क्यों न कर ली गई हो। यद्यपि हम सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं। हमारा शास्त्र हमें धर्म के मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करता है और धर्म श्रेष्ठ है, यह कहता है। किन्तु बात जब राष्ट्र की हो तो राष्ट्र धर्म सर्वोपरि है, यह भी कहता है। जिसका ज्ञान संभवतः हम सभी को है।

अतः हमें उपरोक्त कर्तव्यों का पालन करना चाहिए, इसी में जन का कल्याण है।





आनंद कुमार श्रीवास्तव
डी.ई.ओ.

अगर हम नहीं पढ़े लिखे तो
हम अनपढ़ कहलायेंगे
मातृमूभि की उन्नति में
हम बाधक बन जाएंगे।

पुस्तक पढ़ाई का उत्तम साधन
पुस्तक को हम दोस्त बनाए
अच्छी बात सिखाती पुस्तक
बुरी बात से बचाती पुस्तक।

पुस्तक है ज्ञानों की खान
इसमें तो सम्पूर्ण ब्रह्मांड
पुस्तक से न जी चुराए
यही तो बेड़ा पार लगाए।





रवि कुमार
एम. टी. एस.

ऊँचे-ऊँचे मड़वा

ऊँचे-ऊँचे मड़वा बनाईब बाबा जी।
ऊँचे-ऊँचे मड़वा बनाईब बाबा जी।
तोहके अपना घरवा बुलाईब बाबा जी।
मेवा मिष्टान मंगवाईब बाबा जी।
तोहके ही भोग लगाईब बाबा जी।

ऊँचे-ऊँचे मड़वा बनाईब बाबा जी।
फूल बेल-पत्र मंगवाईब बाबा जी।
तोहके ही चढ़नीया चढ़ाईब बाबा जी।
तोहके अपना अपना घरवा बुलाईब बाबा जी।
धूप अगरबत्ती देखाईब बाबा जी।

ऊँचे-ऊँचे मड़वा बनाईब बाबा जी।
ऊँचे-ऊँचे मड़वा बनाईब बाबा जी।
तोहके अपना घरवा बुलाईब बाबा जी।





आभा झा
द्वारा-अविनाश कुमार ठाकुर
स०ले०अ०

गूँजती यादें तेरी

मेरे मन के खंडहर में गूँजती यादें तेरी ।
गाँव से लेकर शहर में गूँजती यादें तेरी ॥

गा रही कोयल प्रभाती झूमती हों डालियाँ
ऐसी मस्तानी डगर में गूँजती यादें तेरी ।

वादियों को चूम बादल जब करे अठ्खेलियाँ
उस रुपहली दोपहर में गूँजती यादें तेरी ।

तप्त मिट्टी पर पड़ी बूँदों की सौंघी सी महक
दूब के हँसते अघर में गूँजती यादें तेरी ।

सो रहा सूरज समंदर पार चादर तान कर
थपकियाँ देती लहर में गूँजती यादें तेरी ।

फेंकता ठेला उछा जब झील में बच्चा कोई
ऊर्मि पर अटकी नजर में गूँजती यादें तेरी ।

हो बहारें या कि पतझड़ या कठिन राहें गुजर
जिंदगी के हर सफर में गूँजती यादें तेरी ।





उस पल में ही तो रहना है,
जिस पल में तेरा होना है।
वादा करो मुझसे ये तुम,
कि मेरा होकर मुझमें ही तो रहना है॥

अच्छी लगती है हवा ये सर्द चलती हुई,
सच ही कहती है, तू मेरे संग चलती हुई।
जाकर उन फिजाओं से ही तो कहना है,
मेरा होकर तुझे मुझमें ही तो मिलना है॥

वादा करो मुझसे ये तुम,
कि मेरा होकर मुझमें ही तो रहना है॥

ये उलझती जुल्फें फना दे रही है,
मेरे प्यार को एक जहाँ दे रही है।
उन जुल्फों से ही तो कहना है,
बस मुझे तुझमें ही तो रहना है॥

वादा करो मुझसे ये तुम,
कि मेरा होकर मुझमें ही तो रहना है॥

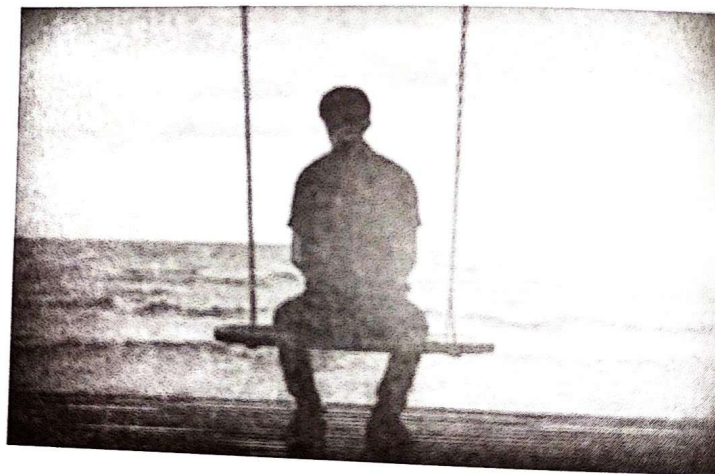




प्रियंका कुमारी
पत्नी-श्री चंदन कुमार
लेखिका

अधूरेपन का एहसास

फटे पुराने लिबास,
पहने, बैठे थे पास।
ऐसे कि ज़िन्दगी से मोह नहीं,
न ही ज़िंदा रहने के प्रयास।
यूँ महसूस हुआ जैसे,
धुकुर धुकुर कर चलती थी साँस।
चेहरे यूँ मायूसी में,
थे शोक, संतप्त, उदास।
यूँ लगा कि पिता के निधन से,
डिग गई ज़िन्दगी की असास।
ये सब मेरे अंतर्मन में,
जैसे कोई चल रहे थे कयास।
पर वास्तविकता तो थी,
अव्यक्त अधूरेपन का एहसास।





स्वातंत्रता दिवस समारोह २०२१ के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय अपने भावोद्गार व्यक्त करते हुए।



स्वातंत्रता दिवस २०२१ के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय कार्यालय की सहायक लेखा अधिकारी सुश्री जयंती पूर्णिमा को उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कार प्रदान करते हुए।

